mediaauditornews@gmail.com mediaauditor Epaperdainikmediaauditor.in mediaauditor वर्ष-29 अंक-31 पृष्ठ-8 मूल्य-3 रूपये

रीवा

01 फरवरी 2025 शनिवार

दैनिक मीडिया ऑडीटर

दैनिक मीडियाऑडीटर

रीवा, सतना से एक साथ प्रकाशित

केएल राहुल के...
@ पेज 7

रवि किशन का विपक्ष पर हमला, बोले- ये तो चाहते ही थे कि कोई घटना हो...

प्रयागराज (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले में भव्य महाकुंभ का आयोजन जारी है। करोड़ों की संख्या में श्रद्धालु हर रोज गंगा, यमुना, सरस्वती के त्रिवेणी संगम में स्नान कर

● मौनी अमावस्या के दिन महाकुंभ में भीड़ जुटी, भगदड़ में 30 की मौत हुई थी

रहे हैं। बीते बुधवार को मौनी अमावस्या के दिन महाकुंभ में ऐतिहासिक भीड़ जुटी जिस कारण वहां थोड़ी देर के लिए भगदड़ जैसी स्थिति बन गई जिस कारण 30 श्रद्धालुओं की मौत हो गई। वहीं, कई लोग घायल भी हुए हैं। इस घटना को लेकर विपक्षी दल योगी सरकार पर हमलावर हैं।

वहीं, अब भारतीय जनता पार्टी के सांसद रवि किशन ने इस मुद्दे पर विपक्षी दलों पर बड़ा हमला बोला है। आइए जानते हैं उन्होंने क्या कहा है।

भाजपा सांसद रवि किशन ने विपक्षी दलों पर हमला करते हुए कहा- ये लोग तो इंतज़ार कर रहे थे कि कोई घटना (महाकुंभ में हुई भगदड़ दुर्घटना) हो जिससे प्रधानमंत्री मोदी और मुख्यमंत्री योगी को घेरा जाए। यह गलत है। उस दिन करोड़ो श्रद्धालु महाकुंभ में आए थे। सालों बाद हिन्दुत्व जगा है, उसी माहौल में यह दुखद घटना हुई है।

भाजपा सांसद रवि किशन ने महाकुंभ में हादसे को लेकर कहा कि यह घटना हम सभी के लिए पीड़ा जनक है। इस पर सरकार जांच बैठा चुकी है लेकिन किसी की मृत्यु पर राजनीति करने से दुखद और कुछ नहीं है। रवि किशन ने कहा कि हम जान रहे हैं कि मिल्कीपुर का चुनाव है। 2027 में चुनाव की रोटियां सेकनी हैं, कुछ और नहीं था तो यही। रवि किशन ने कहा कि इस राजनीति से जनता और श्रद्धालुओं को दुख हो रहा है।

वहीं, भाजपा सांसद रवि किशन ने दिल्ली विधानसभा चुनावों पर भी बयान दिया है। उन्होंने कहा- आप-दा दिल्ली हार रही है। जनता का विश्वास इन पर से उठ चुका है। हम 40 विधानसभा क्षेत्रों में जा चुके हैं। जनता इनकी किसी बात पर विश्वास नहीं करने वाली है। जनता को मोदी की गारंटी पर विश्वास है। जनता 'आप' के झूठे वादों और नर्क की जिंदगी से उबरना चाहती है।

संक्षिप्त समाचार

रूस-यूक्रेन जंग को लेकर लिथुआनिया के राष्ट्रपति ने दिया बड़ा बयान

विलनियस (एजेंसी)। रूस और यूक्रेन के बीच जंग जारी है। इस बीच जंग को लेकर लिथुआनिया के राष्ट्रपति गितानस नौसेदा ने बड़ी बात कही है। उन्होंने कहा कि जंग को समाप्त करने के लिए वार्ता में कीव की पूरी भागीदारी आवश्यक है। लिथुआनिया के राष्ट्रपति ने यह भी कहा कि भविष्य में रूसी आक्रमण से बचने के लिए क्षेत्रीय

देशों तकी ओर से रक्षा मद में अधिक खर्च किया जाना चाहिए। राष्ट्रपति गितानस नौसेदा ने 'एसोसिएटेड प्रेस' को दिए एक साक्षात्कार में कहा कि बिना उचित निवारक उपायों के किया गया समझौता रूस को अपनी सेना को मजबूत करने और क्षेत्र को भविष्य में होने वाले आक्रमणों के लिए तैयार होने का अवसर देगा। नौसेदा ने कहा कि यूक्रेन में युद्ध विराम होने पर भी, ''आप यह नहीं मान सकते कि रूस का इरादा रुक जाने और कुछ नहीं करने का होगा।'' उन्होंने कहा, ''वो इस विराम का उपयोग सैन्य क्षमताओं को मजबूत करने और भविष्य में फिर से हमला करने के लिए करेंगे। और फिर सवाल यह है कि रूस का अगला लक्ष्य कौन होगा? शायद, बाल्टिक देश।'' लिथुआनिया, 1990 तक सोवियत संघ के कब्जे में था। हाल ही में यह देश नाटो सैन्य गठबंधन का ऐसा पहला सदस्य बन गया है, जिसने अपने रक्षा व्यय को देश के समग्र राष्ट्रीय आर्थिक उत्पादन के कम से कम 5 प्रतिशत तक बढ़ाने की प्रतिबद्धता जताई है, जैसा कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपील की थी।

इमरान खान ने पीएम शरीफ को दिया बड़ा झटका

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ पार्टी ने सरकार के साथ रुकी हुई बातचीत संसदीय समिति के माध्यम से फिर से शुरू करने संबंधी प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की पेशकश को खारिज कर दिया है। जियो न्यूज के अनुसार, शहबाज शरीफ ने बृहस्पतिवार को मंत्रिमंडल की

एक बैठक को संबोधित करते हुए कहा था कि सरकार इमरान खान की पार्टी के साथ बातचीत को आगे बढ़ाने के लिए एक संसदीय समिति गठित करने को तैयार है। इमरान खान की पार्टी ने 9 मई 2023 और 26 नवंबर 2024 की घटनाओं की जांच के लिए न्यायिक आयोग का गठन ना करने पर बातचीत बंद कर दी है। जियो न्यूज के कार्यक्रम 'कैपिटल टॉक' में, इमरान की पार्टी के शीर्ष नेता और नेशनल असेंबली में विपक्ष के नेता उमर अयूब खान ने कहा, ''हम प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ की (बातचीत फिर से शुरू करने की) पेशकश को खारिज करते हैं।'' पार्टी की मांगों को दोहराते हुए अयूब ने कहा, ''हमारी मांगें स्पष्ट हैं।'' उन्होंने सभी ''राजनीतिक कैदियों'' की रिहाई की अपील भी की। एक बयान में, सरकार की वार्ता समिति के प्रवक्ता सीनेटर इरफान सिद्दीकी ने कहा कि विपक्षी पार्टी ने एकतरफा बातचीत से पीछे हटकर गैर-लोकतांत्रिक और गैर-राजनीतिक मानसिकता का प्रदर्शन किया है। इमरान की पार्टी की आंदोलनकारी राजनीति की आलोचना करते हुए पीएमएल-एन के सीनेटर ने कहा कि विपक्षी पार्टी ने ना तो अतीत में धरना-प्रदर्शन और लंबे मार्च के जरिए अपना उद्देश्य हासिल किया है और ना ही इस बार ऐसा होगा।

आम आदमी पार्टी के सात विधायकों ने पार्टी छोड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए वोटिंग से पहले आम आदमी पार्टी को बड़ा झटका लगा है। पार्टी के सात विधायकों ने पार्टी छोड़ दी है। आम आदमी पार्टी को यह बड़ा झटका ऐसे समय में लगा है जब दिल्ली विधानसभा चुनाव के लिए वोटिंग में महज पांच दिन बाकी रह गए हैं। दिल्ली विधानसभा की सभी 70 सीटों के लिए 5 फरवरी को वोटिंग होगी जबकि वोटों की गिनती 8 फरवरी होगी। हालांकि पार्टी छोड़ने वाले इन विधायकों को इस चुनाव में आम आदमी पार्टी ने टिकट नहीं दिया था।

इन सात विधायकों ने छोड़ी पार्टी: भावना गौड़ पालम, नरेश यादव महरौली, राजेश ऋषि जनकपुरी, मदन लाल कस्तूरबा नगर, रोहित महरौलिया त्रिलोकपुरी, बी एस जून बिजवासन, पवन शर्मा आदर्श नगर शामिल हैं। आम आदमी पार्टी से इस्तीफा देनेवाले इन विधायकों का कहना है कि पार्टी अपनी ईमानदारी की विचारधारा से पूरी तरह भटक चुकी है। भ्रष्टाचार मिटाने की बुनियाद पर खड़ी हुई पार्टी खुद भ्रष्टाचार के दलदल में धंसी जा रही है। महरौली विधानसभा सीट से विधायक नरेश यादव ने अपने इस्तीफे में लिखा कि उन्होंने ईमानदारी की राजनीति के लिए पार्टी ज्वाइन की थी लेकिन कहीं भी ईमानदारी नजर नहीं आ रही है। भ्रष्टाचार के खिलाफ अन्ना आंदोलन से भारतीय राजनीति में आम आदमी पार्टी का उदय हुआ था। लेकिन मैं बहुत दुखी हूं कि आम आदमी पार्टी भ्रष्टाचार को कम नहीं कर पाई बल्कि खुद भ्रष्टाचार के दलदल में लिप्त हो चुकी है।

सोनिया गांधी ने द्रौपदी मुर्मू पर की विवादित टिप्पणी

जवाब देते हुए राष्ट्रपति भवन ने कहा- "Poor Taste"

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति भवन ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के संसद में अभिभाषण पर कांग्रेस नेताओं की टिप्पणियों को अस्वीकार्य बताते हुए शुक्रवार को कहा कि ये खराब स्वाद वाली और दुर्भाग्यपूर्ण थी। इससे पद की गरिमा को ठेस पहुंची है। राष्ट्रपति कार्यालय ने कहा कि ऐसा हो सकता है कि ये नेता हिंदी जैसी भारतीय भाषाओं के मुहावरे और विमर्श से वाकिफ नहीं हों, इसलिए इस तरह की गलत धारणा बना ली। राष्ट्रपति कार्यालय ने एक बयान में कहा, ''किसी भी मामले में, ऐसी टिप्पणियां गलत, दुर्भाग्यपूर्ण और पूरी तरह से टालने योग्य हैं।''

राष्ट्रपति भवन ने कहा, ''संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण पर मीडिया को प्रतिक्रिया देते हुए कांग्रेस पार्टी के कुछ प्रमुख नेताओं ने ऐसी टिप्पणियां की हैं, जो स्पष्ट रूप से पद की गरिमा को ठेस पहुंचाती हैं, इसलिए ये अस्वीकार्य हैं।'' राष्ट्रपति कार्यालय के बयान के मुताबिक,

इन नेताओं ने कहा है कि राष्ट्रपति अंत तक ''बहुत थक गई थीं'' और वह मुश्किल से बोल पा रही थीं।

बयान में कहा गया, ''राष्ट्रपति भवन यह स्पष्ट करना चाहता है कि यह धारणा पूरी तरह गलत है। राष्ट्रपति किसी भी समय थकी नहीं थीं। वास्तव में, उनका मानना ??है कि हाशिए पर पड़े समुदायों, महिलाओं और किसानों के लिए बोलना, जैसा कि वह अपने संबोधन के दौरान कर रही थीं, कभी भी थकाऊ नहीं हो सकता है।'' दरअसल, राष्ट्रपति द्वारा संसद की संयुक्त बैठक में अपना अभिभाषण समाप्त करने के तुरंत बाद, कांग्रेस नेता सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी वाड्रा को अभिभाषण पर चर्चा करते देखा गया। सोशल मीडिया पर प्रसारित एक वीडियो में सोनिया गांधी को यह कहते हुए सुना गया, ''राष्ट्रपति, अंत तक बहुत थक गई थीं। वह मुश्किल से बोल पा रही थीं... Poor Thing''

दाऊद और छोटा शकील गैंग से जुड़ा गैंगस्टर 29 साल बाद गिरफ्तार

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई पुलिस ने दाऊद इब्राहिम और छोटा शकील गैंग से जुड़े 63 वर्षीय गैंगस्टर प्रकाश रतिलाल हिंगू को 1996 के आर्थर रोड जेल दंगा मामले में 29 साल बाद गिरफ्तार किया है। मुंबई के एनएम जोशी पुलिस के अधिकारियों ने एक गुप्त रूप से मिली सूचना के बाद गैंगस्टर को कर्नाटक के हुबली से गिरफ्तार किया। दाऊद इब्राहिम गिरोह का कुख्यात सदस्य प्रकाश हिंगू करीब तीन दशकों से फर्जी पहचान के तहत कर्नाटक में रह रहा था। वह मूल रूप से जुहू लेन, अंधेरी वेस्ट, मुंबई का रहने वाला हिंगू कभी अंडरवर्ल्ड में एक सक्रिय गैंगस्टर था। लंबे समय से कोर्ट में चल रही सुनवाई में प्रकाश हिंगू पेश नहीं हुआ। इसके बाद कोर्ट ने उसे फरार घोषित कर दिया। इसके बाद मुंबई के एन एम जोशी मार्ग पुलिस की टीम में गुप्त रूप से मिली सूचना के आधार पर टीम बनाई और कर्नाटक जाकर हुबली से गिरफ्तार कर लिया।

गंगा नदी में पलटी नाव, बड़ा हादसा टला; सभी 64 श्रद्धालुओं को बचाया

गंगा नदी में बड़ी नाव और छोटी नाव में टक्कर

वाराणसी (एजेंसी)। यूपी के वाराणसी में शुक्रवार दोपहर को एक बड़ा हादसा हो गया। यहां मान मंदिर घाट के सामने गंगा नदी में बड़ी नाव और छोटी नाव में टक्कर हो गई जिससे नाव पलट गई। जब ये हादसा हुआ तब बड़ी नाव में 58 और छोटी नाव में 6 लोग सवार थे। हालांकि वक्त रहते एनडीआरएफ ने सभी यात्रियों को सुरक्षित बचा लिया गया। हालांकि दो लोग ऐसे भी थे जिन्हें मामूली चोट आई है, जिसके बाद उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती करा दिया गया है।

नाव में सवार सभी श्रद्धालुओं ने लाइफ जैकेट पहनी हुई थी, इस वजह से बड़ा हादसा होने से टल गया। मौके पर मौजूद पुलिस और एनडीआरएफ की टीम ने सभी श्रद्धालुओं को सकुशल बचा लिया। नाव में सवार श्रद्धालुओं में महिलाओं और बुजुर्गों की संख्या ज्यादा थी, बच्चे कम थे। चश?मदीदों का कहना है कि एक बड़ी नाव छोटी नाव से टकरा गई थी। टक?कर के बाद बीच गंगा में दोनों नावों का नावों का संतुलन बिगड़ गया और नाव पलट गई। इससे श्रद्धालुओं में अफरा-तफरी मच गई। लेकिन एनडीआरएफ और जल पुलिस तुरंत मौके पर पहुंच गई। सभी ने लाइफ जैकेट पहन रखी थी, सभी को बचा लिया गया।

अपर पुलिस आयुक्त (लॉ एंड ऑर्डर) डॉ. एस चिनप्पा ने बताया कि सभी यात्री सुरक्षित हैं। नाव मालिक और चालक पर मुकदमा दर्ज होगा। साथ ही उन्होंने नाविकों को ओवर लोडिंग पर संचालन नहीं करने की चेतावनी दी है।

सोनिया के बचाव में उतरीं प्रियंका गांधी

बोलीं- 'राष्ट्रपति का करती हैं सम्मान, तोड़-मरोड़ कर पेश किया गया बयान'

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण के बाद सोनिया गांधी के बयान को लेकर नई बहस छिड़ गई हैं। एक तरफ भारतीय जनता पार्टी सोनिया गांधी से माफी की मांग कर रही है तो वहीं कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी अब सोनिया गांधी के बचाव में उतर गई हैं। प्रियंका गांधी ने भाजपा के हमले पर पलटवार करते हुए कहा कि उनकी मां राष्ट्रपति का बहुत सम्मान करती हैं, उनकी बातों को तोड़-मरोड़कर पेश किया गया है। प्रियंका गांधी ने यह भी कहा कि सोनिया गांधी की टिप्पणी को लेकर माफी की मांग करने वाली भाजपा को पहले 'देश को डुबोने' के लिए माफी मांगनी चाहिए।

दरअसल, कांग्रेस संसदीय दल की प्रमुख सोनिया गांधी ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के अभिभाषण के बाद कहा कि वह अपने संबोधन के आखिर तक थक गई थीं और बहुत मुश्किल से बोल पा रही थीं। वहीं भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष जे पी नड्डा ने सोनिया गांधी की टिप्पणी की निंदा की। उन्होंने मांग की कि वह राष्ट्रपति और भारत के आदिवासी समुदायों से बिना शर्त माफी

मांगें। प्रियंका गांधी ने संसद परिसर में संवाददाताओं से कहा, ''मेरी मां 78 साल की एक बुजुर्ग महिला हैं। उन्होंने सिर्फ यह कहा कि राष्ट्रपति इतना लंबा भाषण पढ़कर थक गई होंगी। वह महिलाओं का बहुत सम्मान करती हैं। यह बहुत दुर्भाग्यपूर्ण है कि मीडिया ने इसे तोड़-मरोड़कर पेश किया।÷ सोनिया की टिप्पणी पर भाजपा की ओर से माफी की मांग किए जाने के बारे में पूछे जाने पर प्रियंका गांधी ने कहा, ''उन्होंने (भाजपा) देश को डुबोया है, पहले उसके लिए माफी मांगें।''

वहीं लोकसभा में कांग्रेस के उप नेता गौरव गोगोई ने भी सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर पोस्ट किया, ''माननीय राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू जी के स्वास्थ्य के प्रति सोनिया गांधी जी की सहानुभूति भाजपा के लोगों को पच नहीं रही है। भारत के प्रत्येक व्यक्ति के मन में राष्ट्रपति के प्रति सम्मान और सहानुभूति है।'' उन्होंने कहा, ''क्या भाजपा राष्ट्रपति मुर्मू के प्रति उस अनादर का जवाब देगी, जब उन्हें संसद भवन या अयोध्या में राम मंदिर के उद्घाटन में आमंत्रित नहीं किया गया? मैं उन्हें इस प्रश्न का उत्तर देने की चुनौती देता हूं।''

तिरुपति मंदिर ट्रस्ट को मिला एक करोड़ का दान

बैंक में रहेगा पैसा, ब्याज से भक्तों के मुफ्त भोजन का इंतजाम

नई दिल्ली (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के तिरुमाला में तिरुपति मंदिर ट्रस्ट को दान में एक करोड़ रुपये मिले हैं। चेन्नई के एक भक्त ने यह दान खास तौर पर भक्तों के लिए चलाई जाने वाली फ्री खाने की योजना के लिए किया गया है। चेन्नई के एक श्रद्धालु ने शुक्रवार को तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) के एसवी अन्नप्रसादम ट्रस्ट को 1 करोड़ रुपये का दान दिया। वेंकटेश कन्नपन ने रंगनायकुला मंडपम में टीटीडी के अतिरिक्त कार्यकारी अधिकारी सीएच वेंकैया चौधरी को डिमांड ड्राफ्ट के रूप में यह राशि दान की।

मंदिर निकाय ने एक आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति में कहा, ÷कन्नपन ने टीटीडी के एसवी अन्नप्रसादम ट्रस्ट को 1 करोड़ रुपये का दान दिया है।÷ पूर्व सीएम एन टी रमाराव ने 1985 में प्रतिदिन 2,000 तीर्थयात्रियों को मुफ्त भोजन परोसने के लिए वेंकटेश्वर नित्य अन्नदानम बंदोबस्ती योजना शुरू की थी।

बाद में, इसे 1994 में श्री वेंकटेश्वर नित्य अन्नदानम ट्रस्ट के नाम से एक स्वतंत्र ट्रस्ट में बदल दिया गया और 2014 में इसे श्री वेंकटेश्वर अन्नप्रसादम ट्रस्ट के रूप में बदल दिया गया।

दुनिया भर से मिलने वाले दान से चलने वाला यह ट्रस्ट राष्ट्रीय कृत बैंकों में धन जमा करता है और उन पर मिलने वाले ब्याज से भक्तों को भोजन परोसने का खर्च चलाता है। यह हजारों भक्तों को पेय पदार्थ बिना किसी शुल्क के देता है और दिन में तीन बार भोजन परोसता है।

तिरुपति बालाजी देश का सबसे अमीर मंदिर है। मंदिर के पास 2.5 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की संपत्ति है। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 10 टन से ज्यादा सोना, करीब 16000 करोड़ रुपये और अन्य संपत्तियां भी हैं। तिरुपति मंदिर के संचालन और वित्त की देखरेख तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम करता है। तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम भारत में एक स्वतंत्र सरकारी ट्रस्ट है, जिसका प्रबंधन आंध्र प्रदेश सरकार द्वारा किया जाता है। इसका मुख्यालय आंध्र प्रदेश में तिरुमाला, तिरुपति में है।

मुंबई के वर्सोवा से दो बांग्लादेशी नागरिक पकड़ाए

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई पुलिस ने वर्सोवा से दो बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है। दोनों रिश्ते में पिता-पुत्र लगते हैं। ये दोनों आठ साल से भारत में पहचान छिपाकर रह रहे थे। दोनों ने अवैध तरीके से भारत के अंदर घुसपैठ की थी। इसके बाद से दोनों यहीं रहने लगे। वर्सोवा पुलिस ने शुरुआती पूछताछ के बाद दोनों दो गिरफ्तार कर लिया है। प्राथमिक रूप से मिली जानकारी के मुताबिक मुंबई के वर्सोवा पुलिस ने अवैध रूप से भारत में रहने वाले दो बांग्लादेशी नागरिकों को गिरफ्तार किया है, जिसमें एक मोनेर बुकतियार शेख और दूसरा बुकतियार दोसुर शेख है। एटीसी द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर और पुलिस को उनकी बातचीत से महसूस हुआ कि वह दोनों भारतीय नहीं हैं। उनकी भाषा अलग नजर आ रही थी। इसके बाद पुलिस उप निरीक्षक सचिन उगले और उनकी टीम से जुड़े हुए लोगों ने मौके पर जाकर जांच की। पुलिस ने जब उनसे उनका नाम और पता पूछा तो बांग्लादेशी नागरिक सही तरीके से जवाब नहीं दे पाए। इसके बाद पुलिस उप निरीक्षक सचिन ने सभी प्रोटोकॉल को फॉलो करते हुए छानबीन की और पता चला कि दोनों साल 2016 के आस पास अवैध तरीके से बांग्लादेश से भारत आए थे।

प्रदेश के खेल मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने दी मध्य प्रदेश के पदक विजेता खिलाड़ियों को बधाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। नेशनल गेम्स उत्तराखंड 2025 में मध्य प्रदेश के खिलाड़ियों का शानदार प्रदर्शन जारी है। आज के मुकाबलों में प्रदेश ने 3 स्वर्ण, 2 रजत और 1 कांस्य पदक जीतकर कुल 6 पदक अपने नाम किए। अब तक मध्य प्रदेश के खाते में 3 स्वर्ण, 3 रजत और 2 कांस्य सहित कुल 8 पदक हो चुके हैं, जिससे राज्य शीर्ष 5 में शामिल हो गया है। प्रदेश के खेल मंत्री विश्वास कैलाश सारंग ने खिलाड़ियों को उनकी उपलब्धियों पर बधाई देते हुए कहा कि मध्य प्रदेश के खिलाड़ी राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना परचम लहरा रहे हैं। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों की मेहनत और प्रदेश सरकार के सहयोग से यह सफलता संभव हो सकी है। खेल मंत्री ने आगे कहा कि राष्ट्रीय खेलों से पहले खिलाड़ियों की विशेष तैयारी पर जोर दिया गया था, जिसका असर अब पदकों के रूप में देखने को मिल रहा है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सीमेंट संयंत्र इकाई में हुई दुर्घटना पर दुख व्यक्त किया

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने पन्ना जिले की अमानगंज तहसील में सेमरिया थाना क्षेत्र में स्थित जेके सीमेंट संयंत्र इकाई में निर्माणाधीन छत शंटिंग गिर जाने से हुई दुर्घटना पर दुःख व्यक्त किया है। यह घटना हुई है जिसमें 4 व्यक्तियों की असामयिक मृत्यु हो गई है। इनमें से तीन व्यक्ति बिहार के पूर्णिया जिले के निवासी हैं। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस दुर्घटना की विस्तृत जानकारी प्राप्त की और प्रभावित परिवारों को आवश्यक सहायता राशि प्रदान करने के निर्देश दिए। कमिश्नर सागर डॉ. वीरेंद्र सिंह रावत ने पवई विधायक श्री प्रह्लाद लोधी, सीमेंट संयंत्र के महाप्रबंधक, डीआईजी छतरपुर और पन्ना जिला प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ चर्चा कर प्रभावित परिवारों को सहायता राशि प्रदान करने की कार्यवाही की है। इस दुर्घटना में मृत व्यक्तियों के परिजन को सीमेंट संयंत्र प्रबंधन की ओर से 18-18 लाख रुपए एवं बीमा राशि चार लाख रुपए सहित 50-50 हजार रुपए अंत्येष्टी सहायता के रूप में प्रदान किए जा रहे हैं। इसके साथ ही दुर्घटना में घायल 15 व्यक्तियों को एक-एक लाख रुपए की सहायता राशि उपचार व्यय, उपचार की अवधि का वेतन और परिवहन व्यय भी सीमेंट संयंत्र इकाई द्वारा प्रदान किया जाएगा।

पावर मैनेजमेंट कंपनी में साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। एमपी पावर मैनेजमेंट कंपनी द्वारा लगभग 300 अभियंताओं व कर्मचारियों को साइबर सुरक्षा का प्रशिक्षण दिया गया।तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम छह सत्रों में आयोजित किया गया जिसमें जबलपुर व भोपाल में कार्यरत कार्मिकों ने ऑफलाइन व ऑनलाइन शामिल हो कर साइबर सुरक्षा के बारे में गहनता से जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण कार्यक्रम में डिजिटल अरेस्ट के बारे में और इससे बचाव के बारे में कार्मिकों को महत्वपूर्ण तथ्यों से अगवत कराया गया। न्यू कॉलर या अज्ञात नंबरों से बचने के उपाय बताए गए। मुख्य महाप्रबंधक सूचना प्रौद्योगिकी एफके मेश्राम ने जानकारी दी?कि डिजिटल अरेस्ट व डीपफेक के महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पावर मैनेजमेंट कंपनी के कार्मिकों के लिए इस जागरूकता कार्यक्रम को आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कार्मिकों को डिजिटल अरेस्ट व डीपफेक के बारे में शिक्षित करना और उनसे बचाव के उपायों के बारे में जागरूक करना है। साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों के द्वारा संचालित सत्रों में कार्मिकों को साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में ज्ञानार्जन करने का मौका मिला। कार्मिकों को सलाह दी गई कि वे अपने ईमेल का पासवर्ड प्रत्येक 90 दिन में बदलते रहें। डीपफेक से बचें-प्रशिक्षण कार्यक्रम में कार्मिकों को जानकारी दी गई कि डीपफेक एक प्रकार का कृत्रिम बुद्धिमत्ता (ढ्ढ) है, जिसका उपयोग विश्वसनीय फर्जी चित्र, ध्वनियाँ और वीडियो बनाने के लिए किया जा सकता है। 'डीपफेक' शब्द डीप लर्निंग अवधारणा को किसी नकली चीज़ के साथ जोड़ता है।डीपफेक फर्जी छवियों और ध्वनियों को संकलित करता है और उन्हें मशीन लर्निंग एल्गोरिदम का उपयोग करके एक साथ जोड़ता है। नतीजतन, यह ऐसे लोगों और घटनाओं का निर्माण करता है जो अस्तित्व में नहीं हैं या वास्तव में घटित नहीं हुए हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान डिजिटल अरेस्ट व डीपफेक के मुद्दों पर संवाद कर व्यक्तिगत सुरक्षा के लिए सबसे अच्छे अभ्यासों से अवगत करवाया गया। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम से यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया कि पावर मैनेजमेंट कंपनी के कार्मिक डिजिटल अरेस्ट व डीफेक के मामलों में समर्थ बनें और डिजिटल जगत में सुरक्षित रहें।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा, भेदभाव और छुआछूत को दूर करने के लिए रहा समर्पित-राज्य मंत्री गौर

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण, विमुक्त घुमंतु और अर्धघुमंतु कल्याण विभाग श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का जीवन कुष्ठ रोगियों की सेवा, भेदभाव और छुआछूत को दूर करने के लिए समर्पित रहा। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के निरंतर प्रयासों से गांधी जी के स्वच्छता के विचारों को आज देश में आदत के रूप में अपनाया जा चुका है। राज्य मंत्री श्रीमती गौर और राज्य मंत्री लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने सिविल अस्पताल हताईखेड़ा गोविंदपुरा में कुष्ठ जागरूकता पखवाड़े का शुभारंभ किया। उपस्थित जनों ने कुष्ठ जागरूकता और उन्मूलन के लिए संकल्प वाचन किया। उन्होंने कुष्ठ रोगियों को ग्रिप ऐड एवं पदरक्षक का वितरण किया। कार्यक्रम में कुष्ठ रोग से ठीक हो चुके व्यक्तियों ने अपने अनुभव साझा किए।

राज्य मंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि सिविल अस्पताल हताईखेड़ा गोविंदपुरा क्षेत्र में एक सौगात के रूप में स्थापित हुआ है । इस 100 बिस्तरीय अस्पताल में सुविधाओं का निरंतर

विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने सिविल अस्पताल गोविंदपुरा के इमरजेंसी विभाग, प्रसूति वार्ड, पी एन सी वार्ड एवं पोषण पुनर्वास केंद्र का लोकार्पण किया। कार्यक्रम की शुरुआत में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की फोटो पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन कर की गई। उपस्थित जनों ने शहीदों की स्मृति में मौन धारण कर स्वतंत्रता संग्राम में अपने जीवन का बलिदान देने वाले शहीदों को याद किया।

राज्य मंत्री लोक स्वास्थ्य एवं चिकित्सा शिक्षा विभाग श्री नरेन्द्र शिवाजी पटेल ने कहा कि भारत सरकार द्वारा वर्ष-2027 तक कुष्ठ रोग के संक्रमण को रोकने का लक्ष्य निर्धारित किया है।

मध्य प्रदेश सरकार द्वारा इस दिशा में सभी स्तरों पर कार्य किया जा रहा है। कुष्ठ रोग जांच एवं उपचार की सुविधा शासकीय स्वास्थ्य संस्थानों में निशुल्क उपलब्ध है। शासन द्वारा गुणवत्तापूर्ण उपचार की सुविधा निशुल्क दी जा रही है। मरीजों को दैनिक क्रियाकलापों में परेशानी न हो, इसके लिए विशेष रूप से बनी चप्पलें, ग्रिप ऐड बर्तन और सेल्फ केयर किट भी दी जा रही है।

भारत पर्व 2025 में मध्यप्रदेश की पाककला और संगीत कला की मनमोहक प्रस्तुति

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। दिल्ली स्थित लाल किले में आयोजित भारत पर्व 2025 में गुरूवार को मध्यप्रदेश की पाककला और संगीत कला की मनमोहक प्रस्तुति हुई। 'स्टूडियो किचन शोकेस' में प्रदेश के प्रसिद्ध पकवान गराडू चाट और खोपरा पेटिस का लाइव किचन प्रदर्शन और 'देखो अपना देश' सांस्कृतिक संध्या में जबलपुर के श्री जानकी बैंड की प्रस्तुति हुई।

मध्यप्रदेश टूरिज्म के एग्जीक्यूटिव शेफ श्री निशिकांत ने होटल प्रबंधन, खानपान एवं पोषाहार संस्थान, पूसा के तत्वाधान में आयोजित 'स्टूडियो किचन शोकेस' में गराडू चाट और खोपरा पेटिस का सजीव प्रदर्शन किया। सत्र के दौरान शेफ ने व्यंजनों को बनाने की विधि के साथ दर्शकों को इनकी पोषक विशेषताएं और बनाने की सावधानियां भी बताई और दर्शकों की जिज्ञासाओं और प्रश्नों के उत्तर दिए। सत्र के अंत में फूड टेस्टिंग करवाई गई, जिसके माध्यम से दर्शकों को व्यंजनों का स्वाद चखा और पाककला को सराहा। जबलपुर के श्री जानकी बैंड ने सांस्कृतिक संध्या में संगीत प्रस्तुति दी। 'भजो रे रामा हो', 'चंदा चकोर' और 'खूब लड़ी मर्दानी झांसी वाली रानी' की संगीतमय प्रस्तुतियों ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध किया। इसका संयोजन और परिकल्पना श्री देवेंद्र सिंह ग्रोवर तथा संगीत निर्देशन डॉ. क्षिप्रा सुल्लेरे ने किया। सितार पर सुश्री मुस्कान सोनी, गिटार पर सुश्री उन्नति तिवारी और सुश्री माही सोनी, तबला पर सुश्री मनीषा तिवारी और सुश्री मानसी सोनी, ढोलक पर सुश्री श्रेया ठाकुर, सरोद पर सुश्री श्रुति जैन तथा वायलिन पर सुश्री शालिनी अहिरवार ने संगत की। श्री जानकी बैंड बुंदेली लोकगीत, भक्ति संगीत, रविन्द्र संगीत, कबीर वाणी, गुर वाणी, शास्त्रीय और उप शास्त्रीय संगीत के लिए विख्यात है।

विश्व वेटलैण्ड दिवस पर हुई चित्रकला प्रतियोगिता

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। पर्यावरण नियोजन एवं समन्वयक संगठन (एप्को) भोपाल के मध्यप्रदेश राज्य वेटलैण्ड प्राधिकरण एवं पर्यावरण शिक्षण कार्यक्रम के संयुक्त तत्वावधान में विश्व वेटलैण्ड दिवस के अवसर पर गुरुवार को जल-तरंग वेटलैण्ड इंटरप्रिटेशन सेंटर, बोट क्लब बड़ा तालाब के मध्य ड्राइंग-पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में भोपाल के शासकीय, अशासकीय विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लगभग 165 विद्यार्थियों एवं 22 शिक्षकों द्वारा सहभागिता की गयी। प्रतियोगिता के 3 वर्गों में क्रमशः प्रथम वर्ग में कक्षा-6 से 8, द्वितीय वर्ग में कक्षा-9 से 12 और तृतीय वर्ग में महाविद्यालयीन विद्यार्थियों ने भाग लिया।

प्रतियोगिता की इस वर्ष की थीम

प्रोटेक्टिव-2 वेटलैण्ड फॉर अवर कॉमन फ्यूचर'' पर जलाशयों के संरक्षण पर अपने अभिव्यक्त रंगों के माध्यम से प्रस्तुत की। चित्रकला के समस्त प्रतिभागियों को एप्को द्वारा सहभागिता प्रमाण-पत्र प्रदान किये गये। प्रतियोगिता के प्रत्येक वर्ग के प्रथम, द्वितीय और तृतीय विजेताओं को 2 फरवरी को विश्व वेटलैण्ड दिवस के कार्यक्रम में सम्मानित किया जायेगा।

निक्षय मित्र बने और टीबी मरीजों को फूड बास्केट प्रदान कर पुण्य का काम करें -उप मुख्यमंत्री देवड़ा

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। उप मुख्यमंत्री श्री जगदीश देवड़ा ने पिपलिया मंडी में 3 करोड़ 14 लाख 80 हजार रुपए की लागत से निर्मित नवीन विश्रामगृह एवं दो नग आई टाइप आवास गृह का लोकार्पण किया। लोकार्पण अवसर पर उप मुख्यमंत्री ने कहा कि पूरे भारत में टीबी मुक्त भारत अभियान चल रहा है। इसके लिए सभी निक्षय मित्र बने। टीबी मरीजों को गोद ले और मरीजों को फूड बास्केट प्रदान कर पुण्य का काम करें। इस कार्य में हम सभी को सहयोग करना है।लोकार्पण अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्षा श्रीमती दुर्गा विजय पाटीदार, श्री राजेश दीक्षित, जनपद अध्यक्षा श्रीमती इंदिरा, उपाध्यक्ष श्री

भरत सिंह, मल्हारगढ़ जनपद अध्यक्षा श्रीमती पुष्पा पाटीदार सहित अन्य सभी जनप्रतिनिधि, कलेक्टर श्रीमती अदिती गर्ग, पुलिस अधीक्षक श्री अभिषेक आनंद, सीईओ जिला पंचायत श्री राजेश कुमार जैन, विकासखंड स्तरीय अधिकारी, कर्मचारी, बड़ी संख्या में आम नागरिक, पत्रकार मौजूद थे।

उप मुख्यमंत्री श्री देवडा ने कहा कि देश की जनता की ताकत को आधार बनाकर देश को विश्व गुरु के स्थान पर लाने का संकल्प सरकार ने लिया है। प्रधानमंत्री ने संकल्प लिया है कि 2047 में देश विश्व की सबसे बड़ी ताकत होगी। 2047 में आजादी के 100 वर्ष पूर्ण होंगे। इसके लिए सरकार ने आगामी 25 साल का रोड मैप बनाया। 25 साल बाद देश कैसा होगा यह सरकार ने संकल्प लिया। आर्थिक रूप से देश संपन्न होगा विश्व की तीसरी सबसे बड़ी शक्ति होगी। मंदसौर में औद्योगिक निवेश हो इस पर लगातार कोशिश की जा रही है। छुट्टी हुई सड़कों को बजट में लिया जा रहा है। कोई भी परिवार बिना मकान के नहीं रहेगा। सभी को समान अधिकार प्रदान किया जा रहे हैं। सरकार युवा, गरीब, किसान, महिलाओं पर विशेष तौर पर काम कर रही हैं। हर जिले में मेडिकल कॉलेज बनाए जा रहे हैं। जिससे आसानी से गरीब व्यक्ति को स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सके।

केन्द्रीय विद्युत राज्य मंत्री नायक के साथ हुई मंत्री समूह की पहली बैठक

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। केन्द्रीय विद्युत राज्य मंत्री श्री श्रीपद येसो नायक की अध्यक्षता में मंत्री समूह की पहली बैठक वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग से आयोजित की गयी। मंत्री समूह में मध्यप्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्री प्रद्युम्न सिंह तोमर, उत्तर प्रदेश के मंत्री श्री अरविंद कुमार शर्मा, आन्ध्र प्रदेश के मंत्री श्री गोट्टिपती रवि कुमार, राजस्थान के मंत्री श्री हीरालाल नागर, तमिलनाडु के मंत्री श्री थिरु.वी. सेन्थीबालाजी और महाराष्ट्र की मंत्री श्रीमती मेघना दीपक शामिल हुईं। सचिव ऊर्जा श्री पंकज अग्रवाल भी बैठक में उपस्थित थे।

बैठक में ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने बताया कि प्रदेश में लगभग एक करोड़ 80 लाख विद्युत उपभोक्ता हैं और प्रति व्यक्ति विद्युत खपत लगभग 1 283 यूनिट है। प्रदेश की कुल उपलब्ध क्षमता 23 हजार 789 मेगावॉट है। इसमें नवकरणीय विद्युत क्षमता 7 हजार 100 मेगावॉट है। दिसम्बर माह में प्रदेश की अधिकतम माँग 19 हजार 72 मेगावॉट की सफलतापूर्वक पूर्ति की गयी। प्रदेश में लगभग 35 लाख कृषि उपभोक्ता हैं। इनका प्रदेश की जीडीपी में लगभग 45 प्रतिशत का योगदान है। लगभग 60 प्रतिशत उपभोक्ता ग्रामीण क्षेत्र में निवासरत हैं।

ऊर्जा मंत्री श्री तोमर ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के ग्रीन एनर्जी को बढ़ावा देने के महत्वाकांक्षी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सरकार द्वारा सौर ऊर्जा को बढ़ाने के लगातार प्रयास किये जा रहे हैं। राज्य सरकार द्वारा फ्लेक्सी प्लॉन के माध्यम से कृषि क्षेत्र की ऊर्जा माँग को दिन के समय सस्ती सौर ऊर्जा से पूर्ति के प्रयास किये जा रहे हैं। प्रदेश में लगभग 13 लाख स्मार्ट मीटर लगाये जा चुके हैं। अधोसंरचना विकास के साथ ही उपभोक्ता संतुष्टि में वृद्धि के लिये पर्याप्त मानव संसाधन बढ़ाने के प्रयास किये जा रहे हैं। साथ ही जन-संवाद कार्यक्रम शुरू किया गया है।

बकाया बिजली बिल भुगतान नहीं करने पर मुरैना जिले के 59 उपभोक्ताओं पर हुई शस्त्र लायसेंस निलंबन की कार्रवाई

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी कार्यक्षेत्र के भोपाल, नर्मदापुरम, ग्वालियर एवं चंबल संभाग के अंतर्गत आने वाले जिलों में बिजली बिल जमा नहीं करने वाले उपभोक्ताओं के खिलाफ जिला मजिस्ट्रेट द्वारा शस्त्र लायसेंस निलंबन की कार्रवाई की जा रही है। इसी क्रम में जिला मजिस्ट्रेट मुरैना द्वारा शस्त्र लाइसेंस निलंबन का नोटिस देने के बाद भी बिजली का बकाया बिल जमा नहीं करने वाले 59 उपभोक्ताओं के शस्त्र लायसेंस तत्काल प्रभाव से निलंबित कर शस्त्र संबंधित थाने में जमा करने के आदेश दिए गए हैं। जिला मजिस्ट्रेट मुरैना द्वारा जिन उपभोक्ताओं के शस्त्र लायसेंस निलंबित किए गए हैं उनमें श्री रोशन सिंह निवासी बड़ागांव, श्री राम प्रकाश सिंह निवासी बरेठा, श्री महेंद्र पाल सिंह निवासी ग्राम नबाली, श्री ब्रजकिशोर निवासी खड़िया बेहद, श्री केदार सिंह निवासी गढ़िया पुरावास, श्री छोटे सिंह तोमर निवासी खटीक गली सुभाष नगर, श्री प्रदीप सिंह कुशवाहा निवासी ग्राम गणेशपुरा, श्री मायाराम राजपूत निवासी रविदास नगर, श्रीमती निर्मला निवासी रविदास नगर, श्री मुरारी लाल निवासी टिकटोली, श्री बुद्धराम निवासी कीरतपुर, श्री द्वारिका निवासी निठेरा, श्री मुकेश सिंह निवासी गलेटा, श्री कमलेश निवासी दोनारी, श्री जसवंत निवासी जैतपुर, श्री अरुण कुमार सिंघल निवासी केकारस, श्रीधर रावत निवासी ग्राम सराय, श्री कन्हैया धाकड़ निवासी डोंगरपुर और परीक्षित निवासी ग्राम धरसोला जिला मुरैना सहित 59 उपभोक्ताओं का शस्त्र लाइसेंस निलंबित कर दिया गया है। गौरतलब है कि मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी कार्यक्षेत्र के जिलों में जिला मजिस्ट्रेट द्वारा आर्म्स डीलर लायसेंस एवं शस्त्र लायसेंस की स्वीकृति एवं नवीनीकरण के लिए बिजली कंपनी से नोड्यूज प्राप्त किया जाना अनिवार्य किया गया है। कंपनी द्वारा गृह विभाग, म.प्र.शासन के आदेश के अनुसार कंपनी कार्यक्षेत्र के ऐसे शस्त्रधारी बिजली उपभोक्ता जिनके द्वारा बकाया विद्युत बिलों का समय पर भुगतान नहीं किया जा रहा है, साथ ही ऐसे शस्त्रधारी बिजली उपभोक्ता जो अनधिकृत बिजली का उपयोग अथवा बिजली चोरी करते पाए जाएंगे उनके आर्म्स डीलर लाईसेंस और शस्त्र लाईसेंस को जिला मजिस्ट्रेट के माध्यम से निलंबित कराने की कार्यवाही की जा रही है। मध्य क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी ने कहा है कि जो भी शस्त्र लाईसेंसधारी उपभोक्ता अपनी बकाया बिल राशि जमा नहीं करते हैं तो उनके शस्त्र लाईसेंस तत्काल प्रभाव से निलंबित करवाने की कार्यवाही की जाएगी।

जीआईएस भोपाल के लिए एक अद्वितीय अवसर - मंत्री काश्यप

मीडिया ऑडीटर, भोपाल (एजेंसी)। सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम मंत्री एवं भोपाल जिले के प्रभारी मंत्री श्री चैतन्य कुमार काश्यप ने कहा है कि भोपाल में आगामी 24 एवं 25 फरवरी को ग्लोबल इन्वेस्टर समिट आयोजित की जा रही है, जिसमें देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी शामिल होंगे। यह आयोजन भोपाल के लिए एक अद्वितीय अवसर है। उन्होंने भोपाल शहर को स्वच्छ और सुंदर बनाने के लिए मिशन मोड पर काम करने और समिट की सभी तैयारियां समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए।

प्रभारी मंत्री श्री चैतन्य काश्यप ने ग्लोबल इनवेस्टर समिट की तैयारियों को लेकर बैठक ली। बैठक में कलेक्टर श्री कौशलेंद्र विक्रम सिंह,

अतिरिक्त पुलिस कमिश्नर श्री पंकज श्रीवास्तव, नगर निगम आयुक्त श्री हरेन्द्र नारायण, एडीएम श्री सिद्धार्थ जैन, सीईओ स्मार्ट सिटी श्रीमती अंजू अरुण कुमार, डीसीपी ट्रैफिक श्री संजय सिंह, एडिशनल डीसीपी ट्रैफिक श्री बसंत कौल सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रभारी मंत्री श्री काश्यप द्वारा निर्देश दिए गए कि इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मानव संग्रहालय में समिट के आयोजन को लेकर सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाए। यातायात प्रबंधन, आयोजन स्थल पर पार्किंग व्यवस्था, भोपाल के सौंदर्यीकरण हेतु उचित व्यवस्था करने के लिए अधिकारियों को निर्देशित किया गया। प्रभारी मंत्री श्री चैतन्य कश्यप ने ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट में भोपाल शहर की ब्रांडिंग करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने भोपाल आ रहे सभी गणमान्य व्यक्तियों को विश्व धरोहर स्थल सांची, भीमबेटका गुफाओं, रातापानी वन्यजीव अभयारण्य और टाइगर रिज़र्व, और भोपाल के ऐतिहासिक स्थानों का भ्रमण कराने पर जोर दिया है।

प्रभारी मंत्री श्री चैतन्य कश्यप ने सभी संबंधित अधिकारियों से समर्पण और तत्परता के साथ काम करते हुए आयोजन को सफल बनाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि यह समिट न केवल भोपाल बल्कि पूरे प्रदेश के लिए गौरव का विषय है।

हाइड्रा वाहन की टक्कर से बाइक सवार 3 लोग गंभीर

तीनों घायल रीवा के संजय गांधी अस्पताल रेफर किए गए

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी जिले के कोस्टा गांव में शुक्रवार दोपहर 1 बजे तेज रफ्तार हाइड्रा वाहन ने लापरवाहीपूर्वक मोटरसाइकिल को टक्कर मार दी, जिससे बाइक सवार तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

घटना उस समय हुई, जब ग्राम बड़खरा से तीन लोग एक ही मोटरसाइकिल पर सवार होकर ग्राम कोस्टा की ओर जा रहे थे। सड़क किनारे मिट्टी की पटाई का काम चल रहा था, जहां हाइड्रा वाहन ने बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि बाइक सवार तीनों लोग सड़क पर गिर गए।

स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को पहले चुन्नट अस्पताल ले जाया गया। हालत गंभीर होने के कारण तीनों को रीवा के संजय गांधी अस्पताल रेफर कर दिया गया। घायलों की पहचान अंबुज पांडे, स्मिता द्विवेदी और संतोष कुमार द्विवेदी के रूप में हुई है।

चुरहट थाना प्रभारी पुष्पेंद्र मिश्रा ने बताया कि हाइड्रा चालक की लापरवाही से हुए इस हादसे में कार्रवाई की जाएगी।

अवैध कोयला खनन मामले में एक गिरफ्तार

पुलिस ने कोयला लदा मिनी ट्रक पकड़ा, तीन फरार

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले के बुढ़ार थानाक्षेत्र में बीती रात शुक्रवार को रूंगटा तिराहे पर कोयला लदा एक मिनी ट्रक (एमपी 18 जीए 3978) जब्त किया है।

अवैध कोयले का परिवहन कर रहे ट्रक सवार संदीप सिंह को भी पुलिस ने गिरफ्तार किया गया है। जबकि ट्रक ड्राइवर विक्कू समेत तीन लोग मौके से फरार हो गए। पुलिस ने चार लोगों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

पुलिस जांच में पता चला कि शहडोल के पांडव नगर निवासी मोनी सिंह ने कोयला लोड करवाया था और वाहन के मालिक राहुल सिंह हैं। कोयला अमलाई थाना क्षेत्र से सटे बकही गांव से अवैध रूप से खनन किया गया था।

अनूपपुर के बिजुरी से 10 जुआरी गिरफ्तार

4 आरोपी फरार, 1.21 लाख नकद और 21 लाख का माल जब्त

मीडिया ऑडीटर, अनूपपुर (निप्र)। अनूपपुर जिले की बिजुरी पुलिस ने भाटाडांड गांव के जंगल में चल रहे जुआ फड़ पर छापा मारा।पुलिस ने मौके से 10 जुआरियों को गिरफ्तार किया, जबकि चार आरोपी फरार हो गए।

पुलिस अधीक्षक के निर्देश पर एसडीओपी कोतमा आरती साक्य और एसडीओपी अनूपपुर सुमित केरकेट्टा के साथ थाना रामनगर और पुलिस लाइन अनूपपुर से अतिरिक्त बल की मदद ली गई। पुलिस ने मौके से 1.21 लाख रुपए नकद, 10 मोबाइल फोन, एक स्कॉर्पियो और 8 मोटरसाइकिल जब्त की। जब्त किए गए सामान की कुल कीमत 21 लाख रुपए है।

गिरफ्तार आरोपियों में दीपक सिंह, रामू शर्मा, रविशंकर रजक, कृष्णावतार गुप्ता, लाला बैगा, रूपसाय केवट, अबू तोशियान, जयप्रकाश मिश्रा, रामनारायण रजवाड़े और मोहम्मद मुस्ताक शामिल हैं। पूछताछ में पता चला कि अतुल मिश्रा, पप्पू मिश्रा, सरताज और टिबलू जयसवाल जुआ फड़ की व्यवस्था करवा रहे थे, जो पुलिस को देखकर पैसे लेकर फरार हो गए। थाना बिजुरी में जुआ एक्ट की धारा 13 के तहत मामला दर्ज कर जांच की जा रही है।

खाना बनाने का दबाव बनाया तो पति का पैर तोड़ा

घायल जिला अस्पताल में भर्ती, पत्नी पर एफआईआर दर्ज

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। सीधी के महुआ गांव में शुक्रवार सुबह एक युवक ने अपनी पत्नी से खाना बनाने के लिए कहा। पत्नी ने कुछ देर बाद बनाने की बात कही। पति ने दबाव बनाने लगा तो पत्नी ने पत्थर उठाकर उसका पैर तोड़ दिया। युवक ने पत्नी के खिलाफ थाने में एफआईआर की है।

पुलिस के मुताबिक, धनसिल साहू और उसकी पत्नी रीता साहू के बीच विवाद हुआ था। लोगों की मदद से घायल धनसिल को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। अस्पताल चौकी पुलिस ने पीड़ित का बयान दर्ज किया। जिला अस्पताल की चौकी में पदस्थ रामभद्र साहू के अनुसार, पीड़ित के बयान और चोट की गंभीरता को देखते हुए पुलिस ने आरोपी पत्नी रीता साहू के खिलाफ केस दर्ज कर लिया है।

47 हजार की अंग्रेजी शराब के साथ तीन गिरफ्तार

बिहार में शराबबंदी का फायदा उठा रहे तस्कर, ट्रेन से भेज रहे थे खेप

मीडिया ऑडीटर, सिंगरौली (निप्र)। सिंगरौली जिले की मोरवा थाना पुलिस ने तीन शराब तस्करों को गिरफ्तार कर उनके पास से 47 हजार 600 रुपए की अंग्रेजी शराब बरामद की है।

मोरवा थाना प्रभारी कपूर त्रिपाठी ने बताया है कि आरोपी सिंगरौली रेलवे स्टेशन पर बिहार जाने वाली ट्रेन का इंतजार कर रहे थे। संदिग्ध गतिविधियों के आधार पर पुलिस ने पटना निवासी बबलू कुशवाहा, सोनू कुमार साहू और जहानाबाद निवासी जिज्ञासु कुमार की तलाशी ली। इनके पैकिंग बैग से 70 बोतल अंग्रेजी शराब बरामद हुई।

पूछताछ में खुलासा हुआ कि आरोपी उत्तर प्रदेश के शक्तिनगर और सिंगरौली के मोरवा रेलवे स्टेशन से नियमित रूप से ट्रेन के जरिए बिहार में शराब की खेप पहुंचा रहे थे। बिहार में शराबबंदी होने और उत्तर प्रदेश और सिंगरौली की सीमाओं के बिहार से सटे होने का फायदा उठाकर ये लोग अवैध धंधा कर रहे थे।

पुलिस ने सभी आरोपियों के खिलाफ आबकारी एक्ट के तहत मामला दर्ज किया है। इस कार्रवाई में उप निरीक्षक एनपी तिवारी, सहायक उप निरीक्षक संतोष सिंह, संजीत सिंह, डीएन सिंह, उमेश अग्निहोत्री, प्रधान आरक्षक संजय सिंह परिहार, अजीत सिंह और आकाश पटेल सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे।

सोशल मीडिया पर हथियार का प्रदर्शन करने वाले 4 गिरफ्तार, पुलिस ने 11 वारंटियों को भी पकड़ा, अवैध कट्टा-रिवॉल्वर बरामद

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर पुलिस ने शुक्रवार की शाम सोशल मीडिया पर अवैध हथियारों का प्रदर्शन करने वाले 4 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। साथ ही 11 स्थायी वारंटी भी पकड़े गए हैं। कोतवाली थाना प्रभारी अरविंद कुजूर के नेतृत्व में की गई इस कार्रवाई में पुलिस ने आरोपियों को पकड़ा।

गिरफ्तार किए गए मुख्य आरोपियों में महाराजपुर निवासी सलमान खान से 32 बोर देसी रिवाल्वर, ग्राम थरा के रवि अहिरवार से 315 बोर देसी कट्टा, टौंरिया मोहल्ला के अजय बिरहा उर्फ टार्जन से 315 बोर देसी कट्टा और टोरिया मोहल्ला के राज अहिरवार से धारदार हथियार बरामद किया गया। इन सभी आरोपियों ने सोशल मीडिया पर अवैध हथियारों के साथ वीडियो वायरल किए थे।

12 हजार का इनामी भी गिरफ्तार: इसी कार्रवाई में पुलिस ने 11 स्थायी वारंटी भी गिरफ्तार किए, जिनमें 12 हजार का इनामी विशाल राय और 2-2 हजार के इनामी वारंटी मनोज कुमार, विनोद कुमार सिंह, राकेश यादव, विपिन कुमार एवं जबीर उल्ला शामिल हैं। सभी आरोपियों के खिलाफ आयुध अधिनियम के तहत अलग-अलग मामले दर्ज किए गए हैं।

घर से लाखों की चोरी का खुलासा

बिरौड़ी गांव के 5 आरोपी गिरफ्तार, सोने-चांदी के जेवरात और नकदी जब्त

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले के जैतपुर थाना क्षेत्र के बिरौड़ी गांव में हुई बड़ी चोरी का पुलिस ने खुलासा कर दिया है। पुलिस ने पांच आरोपियों को गिरफ्तार कर उनके पास से चोरी का माल जब्त किया है। यह चोरी संतोष सिंह के घर में हुई थी। वह अपने परिवार के साथ रिश्तेदारी में गए हुए थे।

सभी आरोपी बिरौड़ी गांव के रहने वाले: घटना के बाद कुछ लोगों के अचानक गांव से गायब होने पर ग्रामीणों को संदेह हुआ। पुलिस ने एक संदिग्ध करण सिंह चंदेल (20) को हिरासत में लेकर पूछताछ की, जिसने चोरी की बात स्वीकार की। उसकी निशानदेही पर पुलिस ने चार अन्य आरोपियों - ईश्वर प्रसाद गुप्ता, ओमप्रकाश सोनी उर्फ लाला, रामकुशल गुप्ता और रामकुमार गुप्ता को गिरफ्तार किया। सभी आरोपी बिरौड़ी गांव के रहने वाले हैं।

आरोपियों ने घर का ताला तोड़कर सोने-चांदी के जेवरात और नकदी चोरी की थी। पुलिस ने आरोपियों से चोरी किया हुआ सारा सामान जब्त किया है।

विकसित भारत अभियान के अंतर्गत स्पर्श अभियान का आयोजन किया गया

कुष्ठ जागरूकता अभियान से लोगों को किया गया जागरूक

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी की पुण्यतिथि 30 जनवरी के अवसर पर विकसित भारत अभियान के अंतर्गत स्पर्श अभियान का आयोजन एनएचएम सभागार में किया गया। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. बबिता खरे द्वारा महात्मा गांधी जी के फोटो को माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। गांधी जी ने समाज में कुष्ठ रोगी एवं कुष्ठ रोग के प्रति फैली व्यापक भ्रांति और कुप्रथाओ को मिटाने का संकल्प लिया था। उनके द्वारा कुष्ठ पीड़ितों के सेवा कर समाज को संदेश दिया गया था कि कुष्ठ पीड़ित भी समाज का अभिन्न अंग है उन्हे भी सम्मान के साथ जीवन जीने का अधिकार है। सीएमएचओ द्वारा संकल्प वाचन और शपथ दिलाई गई कि कुष्ठ रोगियों के साथ भेदभाव नहीं करेंगे, समाज के मुख्य धारा से जोड़कर कुष्ठ मुक्त बनाने में सहयोग करेंगे।

जिला कुष्ठ अधिकारी डॉ. नागेंद्र बिहारी दुबे द्वारा कुष्ठ रोग एवं विकृति से बचने की जानकारी दी गई। सभागार में उपस्थिति कुष्ठ रोगियों को दिन में दो बार जल तेल उपचार। इसके साथ आम जन में कुष्ठ के बारे मे जागरूकता बढ़ाने के लिए बताया गया कि शरीर में फीके लाल रंग दाग धब्बे जो सुन्न हो जाते हैं, हाथ पैर में झुनझुनी, सुन्नपन होना, चेहरे पर तेलिया चमक, सूजन होना कुष्ठ के लक्षण हैं, इसकी जांच कराना चाहिए। कुष्ठ रोग की जांच और उपचार प्रत्येक सरकारी अस्पताल में निःशुल्क होती है ।

समापन पर कुष्ठ रोगियों को एमसीआर सैण्डल, सेल्फ केयर किट, पोविडोन ट्यूब, कैल्शियम, मल्टीविटामिन, पेरासिटामोल अमोक्सिसिलिन, कॉटन, पट्टी आवश्यक साम्रगी का वितरण किया गया।

कुंभ मेले में स्नान करने गया शहडोल का बुजुर्ग लापता

प्रयागराज में स्नान के दौरान साथियों से बिछड़े, बेटा ने पुलिस से की शिकायत

मीडिया ऑडीटर, शहडोल (निप्र)। शहडोल जिले से प्रयागराज महाकुंभ में स्नान के लिए गए जगदीश बरगाही (70) संगम स्नान के दौरान लापता हो गए। तीन दिन बीत जाने के बाद भी उनका कोई पता नहीं चल पाया है। जगदीश बरगाही 27 जनवरी को अपने रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ प्रयागराज पहुंचे थे। 28 जनवरी को कुंभ स्नान के दौरान वे अपने साथियों से बिछड़ गए।

उनके साथी द्वारिका सिंह और गंगा सिंह ने काफी खोजबीन की, लेकिन जब कोई सुराग नहीं मिला तो वे निराश होकर वापस लौट आए।

पुलिस कार्यालयों के चक्कर काट रहा बेटा: बुढार थाना क्षेत्र के ग्राम पकरिया निवासी जगदीश की तलाश में उनका बेटा दुर्गेश बरगाही लगातार पुलिस कार्यालयों के चक्कर काट रहा है। स्थानीय प्रशासन का कहना है कि भीड़ के दौरान वे कहीं खो गए होंगे। परिजनों की चिंता बढ़ती जा रही है क्योंकि अब तक कोई सुराग नहीं मिल पाया है।

विश्व कैंसर दिवस 4 के अवसर पर होगा मैराथन

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. बबिता खरे ने जानकारी देकर दिनांक 04.02.2025 को विश्व कैंसर दिवस के अवसर पर लीनेस क्लब सीधी के सहयोग से समारोह पूर्वक कार्यक्रम का आयोजन किया जाना है। उक्त कार्यक्रम प्रातः 08 बजे से 10 बजे तक आयोजित होगा जिसमें मैराथन आयोजन जिला अस्पताल से प्रारंभ होकर कलेक्ट्रेट चौराहे से होते हुए सेन्ट्रल स्कूल से गांधी चौराहे तक किये जाने का निर्णय लिया गया है।

जिला चिकित्सालय सीधी एवं नगरपालिका क्षेत्र सीधी के आसपास के समस्त चिकित्सकों, नर्सिंग आफीसर्स, पैरामेडिकल स्टाफ, ए.एन.एम., आशा/ऊषा सहयोगी, सुपरपाईजर्स व समस्त स्वास्थ्य सेवाओं से जुड़े हुए अधिकारी/कर्मचारी को आदेशित किया गया है कि दिनांक 04.02.2025 को प्रातः 08.00 बजे जिला चिकित्सालय प्रांगण में एकत्रित होकर उक्त मैराथन आयोजन को भव्य स्वरूप दिये जाने हेतु समस्त चिकित्सक/कर्मचारी अपने-अपने ड्रेस कोड में उपस्थित होंवे। उक्त दिवस को सुबह 10 बजे के बाद समस्त चिकित्सक/कर्मचारी अपने-अपने कर्तव्य स्थल पर उपस्थित होकर पदीय दायित्वों का निर्वहन करना सुनिश्चित करेंगे।

नगर पालिका सीधी में एचआईवी एवं एड्स विषय पर आयोजित हुई कार्यशाला

मीडिया ऑडीटर, सीधी (निप्र)। जिला शहरी विकास अभिकरण जिला सीधी, मध्यप्रदेश राज्य एड्स नियंत्रण समिति जिला चिकित्सालय जिला सीधी तथा नगर पालिका सीधी के सहयोग से नगर पालिका परिषद सीधी के सभागार में जिले की स्व सहायता समूहों की महिलाओं को एचआईवी एवं एड्स विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई। आयोजित कार्यशाला में प्रशिक्षकों द्वारा एचआईवी के फैलने के कारण असुरक्षित यौन संपर्क से, संक्रमित रक्त और ब्लड प्रोडक्ट (रक्त उत्पाद)से, संक्रमित सुइयों, सिरिंजों या नुकीले औजारों से, एचआईवी संक्रमित मां से उसके बच्चों को होने एवं बचाव के विषय में उपस्थित स्व सहायता समूहों की महिलाओं को जानकारी दी गई।

कार्यक्रम में जिला शहरी विकास अभिकरण जिला सीधी से परियोजना अधिकारी एवं मुख्य नगर पालिका अधिकारी नगर पालिका परिषद सीधी मिनी अग्रवाल, आईसीटीसी काउंसलर जरीना बेगम, आईसीटीसी लैब टेक्नीशियन संतोष तिवारी, परियोजना प्रबंधक संपूर्ण सुरक्षा केंद्र जिला चिकित्सालय सीधी वेदांती मिश्रा, औसटी सेंटर काउंसलर इंदल सिंह, सिटी मिशन मैनेजर संदीप मिश्रा, दिलीप विश्वकर्मा, मनोज कुमार चौबे सिटी मिशन मैनेजर (डूडा) जिला शहरी विकास अभिकरण जिला सीधी, सहायक स्वच्छता अधिकारी गौरव सिंह चौहान एवं नगरीय क्षेत्र के सदस्यों के द्वारा सहभागिता की गई।

केन-बेतवा प्रोजेक्ट को लेकर शिविर लगा रहा प्रशासन

छतरपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में मुआवजे से जुड़ी समस्याएं सुलझाने में जुटा

मीडिया ऑडीटर, छतरपुर (निप्र)। छतरपुर जिले में केन-बेतवा लिंक परियोजना से प्रभावित ग्रामीणों की समस्याओं के समाधान के लिए प्रशासन ने विशेष पहल की है। कलेक्टर के निर्देश पर दूरदराज के गांवों में विशेष शिविरों का आयोजन किया जा रहा है।

गुरुवार को भौंरकुंवा और सुकवाहा में शिविर लगाए गए, जहां सुकवाहा के शासकीय बालक आश्रम में ग्रामीणों की मुआवजे संबंधी समस्याओं का निराकरण किया गया। ग्रामीणों ने बताया कि प्रशासन की इस पहल से उन्हें राहत मिल रही है।

मुन्ना बसोर जैसे कई ग्रामीणों को दस्तावेजों की कमी के कारण मुआवजा नहीं मिल पा रहा था। लेकिन, अब शिविर में आवश्यक दस्तावेज जमा कर वे अपनी समस्याओं का समाधान करवा पा रहे हैं।

70 ग्रामीणों ने रखी अपनी समस्याएं: हल्का पटवारी मोहनलाल अहिरवार ने बताया कि शिविर में लगभग 70 ग्रामीणों ने अपनी समस्याएं रखीं। बैंक खातों से जुड़ी समस्याओं और पैकेज संबंधी मुद्दों का समाधान किया जा रहा है। साथ ही, जिन लोगों के प्रकरणों का निराकरण नहीं हुआ है, उनका सर्वे कर आवश्यक दस्तावेज लिए जा रहे हैं।

उन्होंने बताया कि आगामी दिनों में भी शिविरों का सिलसिला जारी रहेगा। एक फरवरी को ढोड़न और पलकोन्हा में, 2 फरवरी को खरयानी और 3 फरवरी को कदवारा में शिविर लगाए जाएंगे। इन शिविरों का मुख्य उद्देश्य भू-अर्जन से जुड़ी समस्याओं का त्वरित समाधान कर केन-बेतवा लिंक परियोजना के कार्य को गति प्रदान करना है।

विचार

दिल्ली वालों के लिए हर हाथ में लड्डू

दरअसल, दिल्ली विधानसभा चुनाव, गठन के बाद से ही बेहद अलग, दिलचस्प और इतर राजनीतिक पहचान को लेकर चर्चित रहे हैं। यह सही है कि मौजूदा सरकार के सुप्रीमो केजरीवाल जैसी मुफ्त की रेवड़ियों का वादा सभी पार्टियां और राज्य न केवल करने लगे हैं बल्कि पूरा भी करते हैं।

ऐसे में इस बार के चुनाव वाकई दिल्ली वालों के लिए हर हाथ में लड्डू जैसे होंगे। इतना है कि इस बार मुकाबला न केवल कांटे का बल्कि त्रिकोणीय सा बनता जा रहा है, लेकिन यह भी सच है कि सरकार किसी की बने लुभावनी योजनाओं का अंबार होगा। इससे दिल्ली की कितनी तकदीर बदलेगी यही देखने लायक होगा।

दिल्ली का चुनावी सफर भी दिलचस्प है। 1952 में पहली बार राज्य विधानसभा का गठन हुआ तब 48 सीटें थीं। कांग्रेस ने 36 सीटों पर जबरदस्त जीत दर्ज की। 34 वर्ष के चौधरी ब्रह्म प्रकाश मुख्यमंत्री बने जो नेहरू जी की पसंद थे। दरअसल, कांग्रेस देशबंधु गुप्ता को मुख्यमंत्री बनाना चाह रही थी, लेकिन एक हादसे में उनकी मृत्यु के चलते ब्रह्म प्रकाश एक्सीडेण्टल मुख्यमंत्री बने। बेहद साधारण पृष्ठभूमि से आने वाले रेवाड़ी के निवासी ब्रम्ह प्रकाश कभी भी मुख्यमंत्री आवास में नहीं रहे। इस बीच काफी कुछ बदला। 1993 में भाजपा बहुमत में आई। मदन लाल खुराना मुख्यमंत्री बने और 1956 के बाद दिल्ली को कोई मुख्यमंत्री मिला, लेकिन 5 साल में 3 मुख्यमंत्री बदले गए।

खुराना को घोटाले के आरोपों के चलते कुर्सी छोड़नी पड़ी फिर साहिब सिंह वर्मा आए और महंगाई के मुद्दे पर ऐसे घिरे कि उन्हें भी इस्तीफा देना पड़ा। इनके बाद सुषमा स्वराज को कमान मिली जो महज 52 दिन मुख्यमंत्री रहीं। 1998 के चुनाव में भाजपा ने सुषमा स्वराज को तो कांग्रेस ने शीला दीक्षित को आगे किया। कांग्रेस की जीत हुई और शीला दीक्षित मुख्यमंत्री बनीं। दिल्ली में फ्लाई ओवरों का जाल, मेट्रो रेल का विस्तार, डीजल की जगह सीएनजी के उपयोग को बढ़ावा और हरियाली पर खास ध्यान सहित दूसरे काम उनकी पहचान बने। 1998 से 2013 तक तीन बार लगातार दिल्ली की सत्ता पर कांग्रेस और शीला दीक्षित काबिज रहीं। इस बीच 2011 में जन लोकपाल विधेयक की मांग पर दिल्ली में अन्ना आंदोलन हुआ।

30 लोगों की मौत बड़ी खबर है या 30 करोड़ लोगों का सकुशल स्नान करना बड़ी बात है?

नीरज कुमार दुबे

महाकुंभ मेले में मौनी अमावस्या पर्व पर मची भगदड़ में 30 श्रद्धालुओं की मृत्यु होना बहुत दुखद खबर है। लेकिन इस हादसे के बावजूद आठ करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं ने उसी दिन स्नान किया और सकुशल वापस घर गये यह उार प्रदेश प्रशासन की एक बड़ी उपलधि भी है। उार प्रदेश के प्रयागराज जिले की आबादी देखें तो वह लगभग 60 लाख के आसपास है। कुभ मेले में अब तक आ चुके श्रद्धालुओं का आंकड़ा देखें तो वह 30 करोड़ के पास पहुँचने वाला है। योगी सरकार का आकलन है कि 26 फरवरी तक चलने वाले धरती के इस सबसे बड़े मेले में 45 करोड़ के आसपास लोग आयेंगे। ऐसे में आप कल्पना करके देखिये कि इतनी बड़ी भीड़ को संभालने और उनके लिए तमाम तरह की व्यवस्थाएं करने के लिए प्रशासन ने कितने समय से कितने प्रयास किये होंगे।

भगदड़ की एक घटना को लेकर पूरी व्यवस्था पर प्रश्न उठाने वालों को यह भी देखना चाहिए कि मौनी अमावस्या से पहले ही रात को लगभग पांच करोड़ लोग सकुशल स्नान कर चुके थे और घटना के बाद भी आठ करोड़ लोगों ने सकुशल स्नान किया था। इससे पहले के अमृत स्नान के दौरान भी लगभग पांच करोड़ श्रद्धालुओं ने स्नान किया था लेकिन किसी को खरोंच तक नहीं आई थी। जिन लोगों को एक दिन में एक जगह पर आठ से दस करोड़ लोगों का स्नान करना मामूली बात लगती है उन्हें पता होना चाहिए कि यह संख्या कई देशों की कुल जनसंख्या से भी अधिक है।

आपने देखा होगा कि भगदड़ की घटना की खबर मिलते ही विपक्ष के कई नेता इतनी तेजी से बयान जारी करने लग गये थे जैसे कि वह पहले से टाइप करके रखा गया था और किसी हादसे की प्रतीक्षा की जा रही थी ताकि योगी सरकार को घेरा जा सके। कुछ मीडिया संस्थानों ने भी सनसनी फैलाने में देरी नहीं लगाई और अपनी जिम्मेदारी को नहीं समझते हुए सिर्फ अव्यवस्था संबंधी खबरें चलाईं। जबकि सच्चाई यह थी कि घटना के कुछ ही मिनटों के भीतर हालात पर काबू पाया जा चुका था और इसी का परिणाम था कि पूरे दिन स्नान सुचारू रूप से चला और आज भी करोड़ों लोग अब तक डुबकी लगा चुके हैं और सरकार के इंतजामों की तारीफ कर रहे हैं। कुछ लोगों ने सोशल मीडिया और मीडिया के मंचों से सवाल उठाया कि जब यूपी सरकार सुबह-शाम श्रद्धालुओं की संख्या के आंकड़े जारी कर रही है तो उसे सुबह मारे गये श्रद्धालुओं की संख्या बताने में सोलह घंटे क्यों लग गये? ऐसे लोगों को समझना होगा कि महाकुंभ मेले में आ रहे श्रद्धालुओं की गिनती के लिए एआई कैमरों सहित तमाम तरह की तकनीक की मदद ली जा रही है और भगदड़ में मारे गये लोगों की संख्या बताने में समय इसलिए लगा होगा क्योंकि मौत का आंकड़ा किसी की मृत्यु के बाद ही बताया जाता है। यदि आपने घटना के बाद के वीडियो देखें हों तो उसमें साफ प्रदर्शित हो रहा है कि घायल अवस्था में कई लोगों को एम्बुलेंसे ग्रीन कॉरिडोर बनाकर तेजी से अस्पताल ले जा रही हैं। यूपी सरकार सुबह से ही कह रही थी कि कई लोग गंभीर रूप से घायल हुए हैं। हो सकता है कि किसी की इलाज के दौरान मृत्यु हुई हो या किसी की अस्पताल लाये जाने के दौरान ही मृत्यु हो गयी हो। यह भी सर्वविदित है कि जब तक डॉक्टर किसी को मृत घोषित नहीं कर देते और उसकी पहचान तथा अन्य औपचारिकताएं पूरी नहीं हो जातीं तब तक आंकड़े सामने नहीं आते। यहां यह भी ध्यान रखना चाहिए कि एक हादसा जो हो चुका था उसके बारे में उस समय ज्यादा जानकारी देने से यदि हालात बिगड़ जाते तो और भी हादसे हो सकते थे क्योंकि करोड़ों की संख्या में लोग एक जगह पर मौजूद थे। 30 श्रद्धालुओं की मौत होना हृदय विदारक है और मृतकों के परिजनों की दशा समझी जा सकती है लेकिन हमें यह भी देखना होगा कि अब तक 30 करोड़ लोग सकुशल स्नान करके जा चुके हैं। देखा जाये तो कुंभ मेले की बड़ी तस्वीर भगदड़ की एक घटना की नहीं बल्कि यहां करोड़ों की संख्या में उत्साह के साथ स्नान कर बिना किसी नुकसान के जा चुके श्रद्धालुओं की है। यहां हमें यह भी समझना होगा कि भगदड़ या भूकंप या दुर्घटनाओं या हत्याओं से होने वाली मौतों पर प्रतिक्रिया करते समय या उससे संबंधित समाचार दिखाते समय हमें संयम बरतना चाहिए। बहरहाल, निश्चित रूप से कुंभ भगदड़ बड़ी खबर है। लेकिन भारत जैसे भीड़भाड़ वाले देश में भगदड़ से होने वाली मौतें विभिन्न बीमारियों और कारणों से होने वाली कुल मौतों का केवल एक अंश मात्र हैं।

महिलाओं की सहभागिता और योगदान

मो. नजीब अहसन

21वीं सदी का यह दौर मानवता के इतिहास में एक ऐसा समय है, जब दुनिया भर में सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन तेजी से हो रहे हैं। ऐसे में जब भी बात महिलाओं के अधिकारों और उनके सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक सशक्तिकरण की होती है, तो यह एक ऐसे संघर्ष की कहानी बयां करता है, जो सदियों से चली आ रही है। विश्व के कई देशों में आज भी महिलाएं समानता, स्वतंत्रता और अपने मौलिक अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ रही हैं। अलबत्ता इस वैश्विकी संघर्ष के बीच भारत ने महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में नई इबारतें लिखी हैं और अनोखी पहचान बनाई है। इस लिहाज से भारत की चर्चा का खास महत्त्व है। महिलाओं की सहभागिता और योगदान ने यहां के पारंपरिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक ताने-बाने को मजबूती दी है। मौजूदा संदर्भ में बात करें तो भारत का परिदृश्य बदल चुका है। यह बदलाव केवल महिलाओं की स्थिति में सुधार नहीं, बल्कि समाज और देश की प्रगति के लिए एक नये युग की शुरु आत का संकेत है। भारत में महिला सशक्तिकरण की कहानी केवल संघर्ष और चुनौतियों तक सीमित नहीं है। यह वह समय है, जब भारतीय महिलाएं परंपरा और आधुनिकता के संतुलन को साधते हुए अपनी पहचान को नये सिरे से गढ़ रही हैं। इस दौर में जब वैश्विकी मंच पर महिला सशक्तिकरण की बातें हो रही हैं, भारत ने न केवल अपनी महिलाओं को आगे बढ़ने का अवसर दिया है, बल्कि यह दिखाया है कि बदलाव संभव है। एक ऐसा ही उदाहरण है, सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) और राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) का ऑल-विमेन राफ्टिंग अभियान, जो एक प्रेरणादायक बदलाव का प्रतीक बनकर उभरा है। यह ऐतिहासिक पहल पुरुषों के वर्चस्व वाले क्षेत्र में महिलाओं की साहसिक दस्तक है, जो न केवल परंपराओं को चुनौती देती है, बल्कि नये आयाम भी गढ़ती है। उत्तराखंड के गंगोत्री से पश्चिम बंगाल के गंगा सागर तक 2,500 किलोमीटर की यात्रा न केवल साहसिक है, बल्कि प्रेरणादायक भी। यह अभियान उन्हें साहस, सामूहिकता और नेतृत्व की नई ऊंचाइयों तक पहुंचा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य सिर्फ गंगा के प्रवाह को संरक्षित करना ही नहीं, बल्कि लोगों के दिलों में उसकी पवित्रता और महत्ता की लौ जलाना भी है। गंगा, जो भारतीय जनमानस के लिए मात्र एक जलधारा नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्ता का भी प्रतीक है। पर बीते दशकों में बढ़ते प्रदूषण और अतिक्रमण के कारण यह जीवनरेखा काफी चुनौतियों का सामना कर रही है। गंगा के किनारे रहने वाले हर नागरिक को यह समझने की आवश्यकता है कि उनकी छोटी-छोटी आदतें, जैसे प्लास्टिक का उपयोग बंद करना, गंगा के तटों की सफाई बनाए रखना और जल संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग, गंगा के संरक्षण में बड़ा योगदान दे सकती हैं। गंगा और उसकी सहायक नदियों के कायाकल्प के इस संकल्प में महिलाओं की भागीदारी समाज को यह संदेश देती है कि नदी संरक्षण सिर्फ एक जिम्मेदारी नहीं, बल्कि एक पवित्र आंदोलन है। गंगा का संरक्षण केवल सरकारी योजनाओं और नीतियों पर निर्भर नहीं हो सकता। यह एक सामूहिक जिम्मेदारी है, जिसमें समाज के हर वर्ग को अपनी भूमिका निभानी होगी। इस अभियान के दौरान महिलाओं ने गंगा के किनारे बसे समुदायों के साथ बातचीत की और उन्हें जल संरक्षण के महत्व से अवगत कराया। वेटलैंड्स का दौरा, घाटों पर संवाद, और जल संरक्षण पर आधारित क्विज़ जैसे कार्यक्रमों ने गंगा संरक्षण की दिशा में सामूहिक चेतना को बढ़ावा दिया। अभियान इस बात को भी रेखांकित करता है कि गंगा का संरक्षण केवल पर्यावरणीय सुधार नहीं है, बल्कि यह सामाजिक और आर्थिक स्थिरता के लिए भी आवश्यक है। जब हम गंगा को साफ रखने की बात करते हैं, तो इसका अर्थ केवल प्रदूषण को रोकना नहीं, बल्कि समग्र पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखना भी है।

पाठ्यक्रमों में बदलाव भी बन गया सत्ता पाने का हथियार

योगेंद्र योगी

देश के नेताओं ने सत्ता पाने के लिए शिक्षा को भी राजनीतिक हथियार बनाया है। सत्ता बदलते ही नेता अपनी विचाराधारा के हिसाब से स्कूल-कॉलेजों के पाठ्यक्रमों में बदलाव करके वोट बैंक को पक्का करने की जुगत में लगे रहते हैं। विद्यार्थी इन सब के बीच फुटबाल बने रहते हैं। उन्हें वही पढना होता है जोकि सरकारें उन्हें पाठ्यक्रमों के जरिए पढ़ाती हैं। बेशत तथ्य तोड़मरोड़ कर ही क्यों न पेश किए जाएं। हालात यह है कि सत्ता में बदलाव के साथ पाठ्यक्रम भी बदलते रहते हैं। देश में शिक्षा में इस तरह के बदलाव पर लंबे अर्से से बहस छिड़ी हुई है। राजनीतिक दल बदलाव को लेकर एक-दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप लगाते रहते हैं। इसी कड़ी में नया विवाद कर्नाटक में हुआ है। कर्नाटक यूनिवर्सिटी की किताब के सेलेबस को लेकर विवाद खड़ा हो गया है। आरोप है कि इसमें गलत शब्दों का इस्तेमाल किया गया। कर्नाटक विश्वविद्यालय के अंडरग्रेजुएट विद्यार्थियों के पहले सेमेस्टर की किताब में ऐसा कंटेंट लिखा गया है, जिससे भारत की एकता बाधित होती है। कथित तौर पर सेलेबस में संघ परिवार, राम मंदिर के निर्माण और भारत माता आदि की आलोचना की गई थी और कुछ गलत शब्दों का इस्तेमाल किया गया था। सेलेबस में आरएसएस की आलोचना करने के लिए बार-बार 'संघ परिवार' जैसे शब्दों का उपयोग करने का आरोप लगाया गया है। इससे पहले जब कर्नाटक में भाजपा की सरकार थी तब पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार पर इसी तरह के आरोप लगाए गए थे।

कर्नाटक में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने सत्ता में आने पर आरोप लगाए थे कि पूर्ववर्ती सिद्दारमैया सरकार ने महज अल्पसंख्यक समुदाय के तुष्टिकरण और कम्युनिस्ट विचारधारा थोंपने के लिए किताबों में विभिन्न बदलाव किए थे। इस दावे की पुष्टि करते हुए सरकार ने कांग्रेस सरकार द्वारा किए गए संशोधनों को दिखाने के लिए 200 पृष्ठों की किताब भी जारी की थी, जिसमें पाठ्यपुस्तकों में हिंदू देवताओं और ऐतिहासिक आंकड़ों को गलत तरीके से पेश किया गया। भाजपा का आरोप था कि विजयनगर के शासकों, मैसूर राजाओं वडियारों, राष्ट्र कवियों कुवेम्पु, बेंगलुरु के संस्थापक केम्पेगौड़ा और सर एम विश्वेश्वरैया पर अध्यायों को या तो हटा दिया गया या उन पर सामग्री कम कर दी गयी। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने टीपू सुल्तान, मोहम्मद गजनी, हैदर अली और मुगलों का बखान किया। सत्ता में आने पर भाजपा ने टीपू, हैदर अली, गजनी और मुगलों पर अध्यायों को अब हटा दिया और स्वतंत्रता सेनानियों तथा मराठा शासक शिवाजी और केम्पेगौड़ा जैसी ऐतिहासिक शख्सियतों को पाठ्यपुस्तकों में प्रमुखता दी गई।

राजनीतिक नजरिए से पाठ्यक्रमों में राज्य ही नहीं केंद्र में जो भी सरकार सत्ता में रही उसने अपनी दलीलों के साथ बदलाव किए हैं। यह सब किया जाता है देशहित और संस्कृति-सभ्यता के इतिहास को बचाने के नाम पर। वर्ष 2019 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) ने कक्षा 12वीं के राजनीति विज्ञान पाठ्यपुस्तक में गुजरात दंगों के बारे में अध्याय जोड़ दिया गया। इस अनुच्छेद में दो परिवर्तन किये गये। अनुच्छेद में शामिल शीर्षक

मुस्लिम विरोधी गुजरात दंगे को बदलकर गुजरात दंगे कर दिया गया। इसी अनुच्छेद के पहले वाक्य से मुस्लिम शब्द भी हटा दिया गया। अनुच्छेद के शीर्षक के अलावा अनुच्छेद के अन्दर के पाठ को नहीं छुआ गया। गुजरात में भाजपा शासन के दौरान 2002 में हुए मुस्लिम विरोधी गुजरात दंगों का संदर्भ पाठ्यपुस्तकों से हटा दिया गया है, जबकि कांग्रेस शासन के दौरान हुए सिख विरोधी दंगों को बरकरार रखा गया। वर्ष 2014 में भाजपा के सत्ता में आने के बाद से यह तीसरी बार है जब सरकार ने पाठ्यपुस्तक संशोधन की कवायद की। इससे पहले 2017 और 2019 में पाठ्यपुस्तकों में संशोधन किया गया था। हटाए गए खंडों में मुगलों पर एक पूरा अध्याय शामिल है, जो एक मुस्लिम राजवंश था, जिसने भारत पर 200 वर्षों तक शासन किया और भारत के संस्थापक पिता मोहनदास करमचंद गांधी द्वारा हिंदू-मुस्लिम एकता की खोज की चर्चा से संबंधित पाठ को हटाया गया। गांधी के हत्यारे नाथूराम गोडसे की ब्राह्मण उत्पत्ति और भाजपा के वैचारिक संरक्षक राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) पर लगाए गए संक्षिप्त प्रतिबंधों को सुविधाजनक रूप से हटा दिया गया, जैसा कि 2002 के गुजरात में हुए सांप्रदायिक दंगों को भी हटाया गया। वर्ष 2022 में एनसीईआरटी ने स्कूलों की किताबों में बदलाव किये। इनमें प्राचीन और मध्ययुगीन काल से लेकर आधुनिक काल तक के बारे में अभी तक पढ़ाए जाने वाले कई तथ्यों को हटा दिया गया। मम्लूक, तुगलक, खिलजी, लोधी और मुगल साम्राज्य समेत सभी मुस्लिम साम्राज्यों के बारे में जानकारी देने वाले कई पन्नों को हटाया गया। जाति व्यवस्था से भी जुड़ी काफी जानकारी को हटा दिया गया, जैसे वर्ण प्रथा वंशानुगत होती है, एक श्रेणी के लोगों को अछूत बताना, वर्ण प्रथा के खिलाफ विरोध, 2002 के गुजरात दंगे, आपातकाल, नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे जन आंदोलनों आदि जैसी आधुनिक भारत की कई महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में जानकारी को भी हटा दिया गया। पाठ्यपुस्तकों से विवादास्पद हटाए गए तथ्यों पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने कहा था कि भाजपा-आरएसएस पाठ्यपुस्तक की सामग्री बदल सकते हैं, लेकिन वे इतिहास को नहीं मिटा सकते।

भाजपा सरकार द्वारा 'पाठ्यपुस्तकों के भगवाकरण' की व्याख्या करते हुए, केरल के कम्युनिस्ट पार्टी के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने कहा था कि संघ परिवार इतिहास के निरंतर भय में रहता है क्योंकि यह उनके असली चेहरे को उजागर करता है। वे इतिहास को फिर से लिखने और उसे झूठ से ढकने का सहारा लेते हैं। संघ परिवार में आरएसएस और भाजपा सहित उसके संबद्ध संगठन शामिल हैं।रोमिला थापर और जयति घोष जैसे प्रख्यात शिक्षाविदों, जिन्होंने एनसीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों के पिछले संस्करण लिखे हैं, ने एक सार्वजनिक बयान जारी कर हटाए गए शब्दों को वापस लेने की मांग की थी।

बीजेपी ने जारी की जिला पंचायत सदस्य प्रत्याशियों की लिस्ट

कांग्रेस छोड़ने वाले अध्यक्ष समेत 3 नेताओं को नहीं मिला मौका

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए नामांकन की प्रक्रिया शुरू होने के बाद बिलासपुर में भाजपा ने जिला पंचायत सदस्य प्रत्याशियों की सूची जारी कर दी है। भाजपा ने अपने अधिकृत लिस्ट में कांग्रेस छोड़कर आए जिला पंचायत अध्यक्ष अरुण सिंह चौहान के साथ ही राजेश्वर भार्गव और राहुल सोनवानी को मौका नहीं दिया है। इसे लेकर अब तरह-तरह की चर्चाएं हो रही है।

त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के तहत नामांकन की प्रक्रिया चल रही है। जिले में अब तक 17 जिला पंचायत सदस्यों के लिए 21 दावेदारों ने नामांकन जमा किया है। नामांकन जमा करने की अंतिम तिथि 3 फरवरी है, जिसके बाद 4 फरवरी को नामांकन पत्रों की जांच होगी। फिर 6 फरवरी को नाम वापसी और चुनाव चिन्ह का आवंटन किया जाएगा।

जिला पंचायत सदस्यों के लिए संगठन और विधायकों से की रायशुमारी: प्रदेश में पहली बार नगरीय निकाय चुनाव के साथ ही त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव एक साथ हो रहा है। नगरीय निकाय चुनाव की तैयारी के साथ ही भाजपा-कांग्रेस के नेता पंचायत चुनाव की तैयारी में जुटे हुए हैं।

भाजपा ने प्रत्याशी तय करने के लिए संगठन के नेताओं के साथ ही विधायकों से रायशुमारी की, जिसके बाद प्रदेश अध्यक्ष की सहमति से भाजपा जिलाध्यक्ष ग्रामीण मोहित जायसवाल और शहर जिलाध्यक्ष दीपक सिंह ठाकुर ने जिला पंचायत सदस्य प्रत्याशियों की लिस्ट जारी की है। इसके साथ ही मस्तूरी और तखतपुर जनपद पंचायत सदस्यों की भी सूची जारी की है।

कांग्रेस छोड़कर भाजपा में आए नेताओं को टिकट नहीं: विधानसभा चुनाव के बाद जिला पंचायत अध्यक्ष अरूण सिंह चौहान, राजेश्वर भार्गव और राहुल सोनवानी ने कांग्रेस छोड़ दिया और भाजपा में शामिल हो गए। दरअसल, अरूण सिंह कोटा विधानसभा से टिकट मांग रहे थे। कहा जा रहा था कि टिकट नहीं मिलने के बाद वो कांग्रेस छोड़ दिए थे। लेकिन, अब इन नेताओं को भाजपा ने भी किनारे कर दिया है। जिला पंचायत सदस्य होने के बाद भी तीनों में से किसी को प्रत्याशी नहीं बनाया गया है।

अब तक 42 से अधिक उम्मीदवारों ने भरा पर्चा: त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव के लिए नामांकन जमा करने की प्रक्रिया पिछले चार दिन से चल रही है। गुरुवार को 25 प्रत्याशियों ने नामांकन पत्र जमा किया है। जबकि, अब तक 42 से अधिक उम्मीदवार जिला पंचायत सदस्य के लिए नामांकन जमा कर चुके हैं।

चौथे दिन गुरुवार को क्षेत्र क्रमांक 06 तखतपुर से स्वाति राहुल शुक्ला, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 07 तखतपुर से होरी लाल माथुर ग्राम पचबहरा, क्षेत्र क्रमांक 08 तखतपुर से दिलीप अग्रवाल ग्राम निरतू, रामेश्वर निर्मलकर ग्राम लोखंडी, रवि कुमार साहू ग्राम पाली, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 10 मस्तूरी से दिकपाल सिंह ग्राम जूहुली ने नामांकन दाखिल किया।

हेमंत यादव ग्राम जांजी, नूरी दिलेन्द्र कौशिल ग्राम सीपत, राजेन्द्र धीवर ग्राम सीपत, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 11 मस्तूरी से अरूना चन्द्रप्रकाश सूर्या ग्राम महमंद, दुरपति अशोक सूर्यवशी ग्राम जांजी, सुलोचना लक्ष्मी नारायण वर्मा ग्राम पंधी, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 12 मस्तूरी से दामोदर कांत ग्राम मस्तूरी, टीआर जोशी ग्राम रिसदा, जुगल किशोर ग्राम पचपेड़ी से नामांकन दाखिल किया है।

मनोहर कुर्रे ग्राम मस्तूरी, पृथ्वी पाल ग्राम मुड़पार, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 13 मस्तूरी से सरोजनी भारद्वाज ग्राम धुवाकारी, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 14 मस्तूरी से नंदिता कैवर्त ग्राम बसंतपुर, राधा खिलावन पटेल ग्राम सोनसरी, सीमा रवि श्रीवास ग्राम लोहर्सी, सोनल मयंक साहू ग्राम लोहर्सी, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 15 कोटा से भोलाराम बैगा ग्राम पंचायत करहीकछार, ललिता बाई पैकरा ग्राम खैरझिटी, निर्वाचन क्षेत्र क्रमांक 16 कोटा से गीता बाई सलाम ग्राम भैंसाझार ने आज नामांकन दाखिल किया।

चाचा की मौत का बदला लेने दोस्त को मार डाला

पहले पिलाई शराब, फिर नदी में दिया धक्का, डैम में मिली थी लाश

मीडिया ऑडीटर, गौरेला-पेंड्रा-मरवाही (एजेंसी)। गौरेला पेंड्रा मरवाही जिले में एक युवक ने अपने चाचा की मौत का बदला लेने के लिए दोस्त की हत्या कर दी। घटना 1 जनवरी पेंड्रा थाना क्षेत्र की है, आरोपी नरेंद्र (21) ने न्यू ईयर पार्टी के बहाने सलीम (57) को कुछ दोस्तों के साथ जंगल ले गया। वहां उसे शराब पिलाई और चाचा की मौत के बारे में पूछताछ की, फिर गुस्से में आकर उसे सोन नदी में धक्का दे दिया।

कुछ दिन पहले सोननदी डैम के पास सलीम खान का शव संदिग्ध हालत में मिला था, जिसके बाद घटनास्थल के आसपास के मोबाइल लोकेशन को ट्रेस किया गया। आसपास के लोगों से पूछताछ के बाद पुलिस आरोपी तक पहुंच पाई। आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया है।

कैसे हुई थी चाचा की मौत: आरोपी नरेंद्र, उसके चाचा आलोक और दोस्त नरेंद्र तीनों सेवरा दुबटिया गांव के रहने वाले हैं। 8 महीने आलोक और सलीम बिलासपुर जा रहे थे, तब एक अज्ञात ट्रक की टक्कर से उसके चाचा की मौत हो गई थी। नरेंद्र इस हादसे में सलीम को दोषी मानता था।

बदला लेने के लिए उतारा मौत के घाट: जांच में खुलासा हुआ कि इसी का बदला लेने के लिए आरोपी ने यह वारदात की। चाचा की मौत के बाद से आरोपी नरेंद्र, सलीम पर शक करता था। जिसके बाद उसने वारदात को अंजाम दिया।

क्या हुआ था उस रात: पुलिस के मुताबिक, न्यू ईयर की रात निगवा डोंगरी जंगल में दोस्तों का खाना-पीना चल रहा था। तभी आरोपी नरेंद्र पार्टी के बहाने सलीम को भी ले गया, वहां उसे खूब शराब पिलाई गई। कुछ देर बाद बाकी दोस्त चले गए।

तब नरेंद्र सलीम को सोन नदी के चेक डैम के पास ले गया, वहां चाचा की मौत के बारे में पूछताछ की और गुस्से में आकर मारपीट की। फिर सलीम को 25-30 फीट ऊंचाई से धक्का दे दिया, जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई।

लोकेशन ट्रेस कर आरोपी तक पहुंची पुलिस: एसपी भावना गुप्ता के निर्देश पर गठित विशेष टीम ने जांच में पाया कि यह हत्या का मामला है। साइबर सेल और पेंड्रा थाना पुलिस की संयुक्त टीम ने घटनास्थल के आसपास के मोबाइल लोकेशन ट्रेस किया। संभावित गवाहों से पूछताछ के बाद आरोपी तक पहुंच पाई।

आरोपी ने कबूला अपना जुर्म: आरोपी ने जुर्म स्वीकार किया है और वारदात की पूरी जानकारी दी। पुलिस ने घटना से जुड़ा गमछा और ऑटो रिक्शा बरामद कर लिया है।

मामले में धारा 103, 238 बीएनएस (हत्या और साक्ष्य छुपाने का अपराध) के तहत मामला दर्ज कर आरोपी नरेंद्र यादव को न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है और आगे की जांच की जा रही है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने ईवीएम रेंडमाइजेशन को लेकर की समीक्षा बैठक

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। नगरपालिका आम निर्वाचन 2025 के अंतर्गत ईवीएम (इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन) के रेंडमाइजेशन की प्रक्रिया की रूपरेखा तय करने के लिए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी की अध्यक्षता तथा उप जिला निर्वाचन अधिकारी की उपस्थिति में कलेक्टर सभाकक्ष में राजनीतिक प्रतिनिधियों के साथ बैठक ली लेकर आवश्यक जानकारी दी। जिसमें राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार जिले को प्राप्त ईवीएम का जिला स्तर एवं रिटर्निंग ऑफिसर स्तर पर ईवीएम मशीन का प्रदर्शन कर रेंडमाइजेशन किए जाने की प्रक्रिया दिखाया। वहीं इस बैठक में जिला निर्वाचन अधिकारी स्तर पर मास्टर ट्रेनर टी. विजय गोपाल राव और गौरव त्रिपाठी ने ईवीएम रेंडमाइजेशन कर के दिखाया। यह प्रक्रिया आज प्रातः 11 बजे जिला कार्यालय के सभागार में संपन्न हुई। वहीं रिटर्निंग ऑफिसर स्तर पर नगरपालिका निगम चिरमिरी में यह प्रक्रिया 3 फरवरी 2025 को प्रातः 11 बजे नगर पालिका निगम चिरमिरी के ऑडिटोरियम में संपन्न की जाएगी। इसके अलावा नगरपालिका परिषद मनेंद्रगढ़, नगर पंचायत झगराखांड, नगर पंचायत नई लेदरी और नगर पंचायत खोंगापानी के लिए यह प्रक्रिया 3 फरवरी 2025 को अपराह्न 1 बजे जिला कार्यालय के सभागार में आयोजित होगी। वहीं नगर पंचायत जनकपुर के लिए रैण्डमाईजेशन 4 फरवरी 2025 को अपराह्न 12 बजे जनपद पंचायत सभाकक्ष जनकपुर में संपन्न किया जाएगा। जिला निर्वाचन अधिकारी ने निर्देश दिए कि सभी संबंधित अधिकारी एवं राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि निर्धारित समय पर अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें, ताकि चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता बनी रहे।

पंचायत चुनाव में मतदान के बाद तुरंत होगी मतगणना

बिलासपुर कलेक्टर का निर्देश- अंधेरा होने से पहले काम पूरा करें

मीडिया ऑडीटर, बिलासपुर (एजेंसी)। बिलासपुर में कलेक्टर अवनीश शरण ने मतदान कर्मियों को महत्वपूर्ण निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि मतदान शाम 3 बजे समाप्त होते ही तुरंत मतगणना शुरू कर दी जाए। अंधेरा होने पर परेशानी न हो, इसलिए भोजन या विश्राम को टालकर पहले मतगणना पूरी करें।

इसके साथ ही गुरुवार को लाल बहादुर शास्त्री हाई स्कूल और गवर्नमेंट मल्टीपर्पज हाई स्कूल में करीब दो हजार मतदान कर्मियों को प्रशिक्षण दिया गया। मास्टर ट्रेनर्स ने मतदान प्रक्रिया की बारीकियां समझाईं। प्रशिक्षण में श्वङ्करू और मतपेटियों के उपयोग की जानकारी भी दी गई।

महापौर के लिए दो वोट डाले जाएंगे: मतदान व्यवस्था के मुताबिक, नगरीय क्षेत्रों में मतदाता महापौर या अध्यक्ष और पार्षद के लिए दो वोट डालेंगे। वहीं पंचायत क्षेत्रों में पंच, सरपंच, जनपद सदस्य और जिला पंचायत सदस्य के लिए चार वोट डाले जाएंगे।

निर्देशों का कड़ाई से पालन: चुनाव की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न पदों के लिए अलग-अलग रंग के मतपत्र तैयार किए गए हैं। कलेक्टर ने कर्मियों को राज्य निर्वाचन आयोग के निर्देशों का कड़ाई से पालन करने को कहा है, जिससे चुनाव प्रक्रिया में किसी को भी अन्याय का एहसास न हो।

चार चरणों में संपन्न होंगे चुनाव: इस बार मौसम अनुकूल होने से चुनाव प्रक्रिया सुगम रहने की उम्मीद है। न अधिक गर्मी होगी और न ही ज्यादा ठंड। नगरीय निकाय और पंचायत चुनाव मिलाकर कुल चार चरणों में संपन्न होंगे। प्रशिक्षण कार्यक्रम में उप जिला निर्वाचन अधिकारी और एडीएम शिवकुमार बनर्जी भी मौजूद रहे।

गर्लफ्रेंड से ब्रेकअप...चित्रकोट वाटरफॉल से कूदा युवक, नाविक ने बचाई जान

मीडिया ऑडीटर, जगदलपुर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ में बस्तर के चित्रकोट वाटरफॉल से एक युवक ने छलांग लगाकर सुसाइड का प्रयास किया है। हालांकि, नीचे मौजूद एक नाविक नाव लेकर उसके पास पहुंच गया और उसकी जिंदगी बचा ली। अब युवक के छलांग लगाने का लाइव वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। एक दिन पहले अपने कुछ दोस्तों के साथ वह चित्रकोट जल प्रपात घूमने आया था।

युवक का नाम भीम कुमार यादव है। ये नारायणपुर जिले के छोटे डोंगर थाना क्षेत्र के कनहार गांव का रहने वाला है। पूछताछ में पता चला वह एक युवती से प्यार करता था। पिछले कुछ सालों से दोनों के बीच प्रेम प्रसंग चल रहा था। लेकिन इस बीच युवती ने इससे ब्रेकअप कर लिया। जिसके बाद से यह डिप्रेशन में था। वहीं 29 जनवरी को चित्रकोट पहुंचा और इसने सुसाइड का प्रयास किया है। पुलिस ने इसे समझाइश देकर छोड़ दिया है।

तुरंत पहुंचा नाविक, निकाला बाहर: इस बीच वहां मौजूद अन्य पर्यटकों ने उसे रोकने की कोशिश की। ऐसा नहीं करने कहा गया, लेकिन वह नहीं माना और नीचे कूद गया। गनीमत रही कि पानी कम था और वहां पहले से ही एक नाविक मौजूद था। युवक नीचे कूदा और तैरने लगा। नाविक उसके पास नाव लेकर पहुंच गया। युवक को वहां से बाहर निकाला गया।

पर्यटकों ने बनाया वीडियो: वहीं इस मामले की जानकारी चित्रकोट पुलिस चौकी के जवानों को दी गई। जवानों ने युवक से पूछताछ की और उसे जाने दिया। वहीं वहां पास में मौजूद कुछ पर्यटकों ने युवक के छलांग लगाने का वीडियो बना लिया। यह वीडियो अब सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है।

पहले भी लोग कर चुके हैं सुसाइड: दरअसल, इस चित्रकोट जल प्रपात में पहले भी कुछ लोगों ने छलांग लगाकर आत्महत्या की है। कुछ साल पहले दंतेवाड़ा जिले के 2 युवाओं ने पारिवारिक कारणों की वजह से (अलग-अलग साल में) छलांग लगाकर सुसाइड किया था। वहीं कुछ महीने पहले ही एक युवती भी नीचे कूद गई थी। दो दिन तक उसकी तलाश की गई। बाद में उसकी लाश मिली थी।

तार का घेरा, फिर भी पहुंच गए: चित्रकोट जल प्रपात के व्यू पॉइंट पर कंटीले तार का घेरा बनाकर उसे कवर किया गया है। फिर भी लोग आसानी से उसे पार कर जहां से पानी नीचे गिर रहा है वहां तक पहुंच रहे हैं। साथ ही सुरक्षा पर भी सवाल खड़ा हो रहा है।

90 फीट नीचे गिरता है पानी: चित्रकोट जलप्रपात जगदलपुर से महज 40 किमी दूर है। इसका आकार घोड़े की नाल की तरह है। यहां इंद्रावती नदी का पानी करीब 90 फीट नीचे गिरता है। अभी जल स्तर कम है। बारिश के दिनों में जल प्रपात पूरी तरह सबाब पर रहता है।

पड़ोसी के घर मिली शादीशुदा महिला की नग्न लाश

अवैध संबंध में हत्या, पलंग में हाथ बंधे हुए थे, रेप की भी आशंका

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर जिले में शादीशुदा महिला की लाश पड़ोसी युवक के घर में मिली है। पुलिस को शक है कि पड़ोसी युवक का महिला से अवैध संबंध था। महिला की लाश नग्न हालत में बिस्तर पर पड़ी थी। दोनों हाथ भी पलंग से बंधे हुए थे। आशंका है कि, पड़ोसी युवक ने ही, रेप के बाद महिला के दोनों हाथ को पलंग पर बांध दिया होगा। इसके बाद उसके सिर पर किसी भारी चीज से वारकर उसकी हत्या कर दी होगी। मामला अभनपुर थाना क्षेत्र का है। इस मामले में पुलिस आरोपी की तलाश कर रही है।

पति काम से नागपुर गया था: पुलिस से मिली जानकारी के मुताबिक, मृतक महिला अपने पति (37 साल) और दो बच्चों के साथ अभनपुर थाना इलाके में रहती थी। उसका पति एक निजी फैक्ट्री में ऑपरेटर का काम करता है। वह 27 जनवरी को कंपनी के काम से नागपुर गया हुआ था। घर पर महिला अपने 2 बच्चों के साथ थी। 28 जनवरी को सुबह 10 बजे के करीब महिला की अपने पति से फोन पर बातचीत भी हुई। इसके बाद शाम 5 बजे उसके एक बेटे ने फोन पर बताया कि मां कहीं चली गई है। छोटा भाई रो रहा है।

रिश्तेदारों के घर किया तलाश: महिला का पति वापस गांव लौटा। उसने अपने रिश्तेदारों और परिचितों के घर पर फोन लगाकर पत्नी की तलाश की, लेकिन उसका कहीं पता नहीं चला। तभी गांव के एक व्यक्ति ने बताया कि पड़ोस के उत्तम साहू के घर पर एक महिला की लाश मिली है। आसपास खून बिखरा हुआ है। उसकी बेरहमी से हत्या हो गई है। साथ ही उत्तम साहू घर से फरार है।

नग्न करके हाथ पलंग पर बांधे: लाश की शिनाख्त उसी महिला के रूप में हुई। पुलिस जांच में सामने आया है कि महिला और उत्तम साहू फोन पर बातचीत करते थे। इस पर महिला के पति ने रोक-टोक भी की थी। आशंका है आरोपी उत्तम ने पहले महिला को अपने घर बुलाया होगा। फिर उससे रेप की वारदात को अंजाम दिया। महिला के विरोध के बाद उसकी हत्या कर आरोपी फरार हुआ होगा। मामला संवेदनशील होने के चलते पुलिस फिलहाल हर एंगल से जांच कर रही है। घटना स्थल को भी सील किया गया है और आरोपी की भी तलाश की जा रही है।

पुलिस कांस्टेबल ने की आत्महत्या

रेलवे ट्रैक पर दो भाग में कटी मिली लाश, पत्नी-बच्चों के साथ किराए के घर में रहता था

मीडिया ऑडीटर, रायपुर (एजेंसी)। रायपुर में पुलिस कांस्टेबल ने आत्महत्या कर ली है। जीआरपी को आरक्षक की लाश रेलवे ट्रैक पर दो भाग में कटी हुई मिली है। आरक्षक अपनी पत्नी और दो बच्चों के साथ माना इलाके में किराए के घर पर रहता था। फिलहाल, आत्महत्या की वजह सामने नहीं आ पाई है। जीआरपी थाना प्रभारी जीएस राजपूत ने बताया कि मृतक का नाम गंगाराम ध्रुव है। पुलिस को गुरुवार रात 11 बजे के करीब सूचना मिली कि शिवनाथ एक्सप्रेस में एक व्यक्ति ने पटरी में कटकर जान दे दी है। जिसके बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर लाश का पंचनामा करवाकर पोस्टमार्टम के लिए भिजवाया। मृतक गंगाराम माना स्थित चौथी बटालियन में ड्राइवर के पद पर पोस्टेड था। घटना के दिन वह जल्दी घर चला गया था।

किराए में रहता है परिवार: गंगाराम अपनी पत्नी और दो बेटों के साथ माना इलाके में ही किराए के मकान में रहता था। पुलिस को लाश के पास से कोई सुसाइड नोट भी नहीं मिला है। फिलहाल, इस मामले में पुलिस ने पोस्टमार्टम के बाद लाश को परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस इस मामले में घर वालों से पूछताछ कर आगे की जांच पड़ताल कर रही है।

हजारों भाजपा कार्यकर्ता ,समर्थकों के बीच बाजे गाजे के साथ निकली भाजपा प्रत्याशियों की नामांकन रैली

विधायक भईया लाल, विधायक रेणुका सिंह ,जिला अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी सहित चुनाव प्रभारी कृष्ण बिहारी रहे शामिल

मीडिया ऑडीटर, बैकुंठपुर/कोरिया (निप्र)। त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 2025 की तैयारियों के बीच भारतीय जनता पार्टी कोरिया के सभी जिला पंचायत सदस्यों और दो जनपद पंचायत बैकुंठपुर सहित सोनहत के जनपद सदस्यों के प्रत्याशियों ने अपना नामांकन दाखिल किया । अवगत करा दें की आज 31 जनवरी को जिला पंचायत कोरिया के 10 में से 9 भाजपा प्रत्याशियों ने बैकुंठपुर कलेक्ट्रेट में अपना नामांकन दाखिल किया । साथ ही जिले अंतर्गत दोनों जनपद पंचायत के भाजपा समर्थित, अधिकृत प्रत्याशियों ने अपने अपने जनपद मुख्यालय में सैकड़ों समर्थकों बीच बाजे गाजे के साथ अपना नामांकन पर्चा दाखिल किया । रैली में मुख्य रूप से शामिल बैकुंठपुर विधायक भईया लाल राजवाड़े ने कहा की भाजपा से उतारे गए सभी प्रत्याशी लोकप्रिय हैं और सभी प्रत्याशी चुनाव जीतेंगे । राजवाड़े ने कहा की भाजपा के कार्यकर्ताओं की मेहनत और विष्णुदेव साय सरकार के विकास सहित मोदी की गारंटी के साथ चुनाव जीतेंगे । उन्होंने सभी प्रत्याशियों को शुभकामनाएं दी । प्रत्याशियों की नामांकन रैली में शामिल पूर्व केंद्रीय मंत्री व वर्तमान विधायक भरतपुर सोनहत रेणुका सिंह ने कहा की हमारे सभी प्रत्याशियों की क्षेत्र में और भाजपा में अच्छी और ईमानदार के साथ कर्मठ छवि है इसके साथ पार्टी के कार्यकताओं की मेहनत और प्रदेश की विष्णुदेव साय सरकार के विकास सहित माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जनहित की योजना जैसे महतारी वंदन के रूप में प्रदेश की बहनों को आर्थिक सहयोग , किसानों से ऊंचे समर्थन मूल्य में उपज खरीदने और उन्हें अंतर की राशि के रूप कृषि उन्नति हेतु लाभ प्रदान करना , मोदी जी के प्रयासों के रूप प्रधानमंत्री आवास योजना से सभी को आवास दिलाने सहित कई महत्वाकांक्षी योजनाओं की वजह से निश्चिंत ही विजई प्राप्त करेंगे । इसी तारतम्य में कोरिया जिले के युवा जिला अध्यक्ष देवेंद्र तिवारी ने कहा की हमारे कार्यकर्ताओं की ऊर्जा एकजुटता और हर अभियान पर जीत दर्ज करने की जिद् और बुलंद हौसला ही हमारी जीत को तय कर देती है । साथ ही भारतीय जनता पार्टी की केंद्र की मोदी सरकार जो देश में विकास और उन्नति की जननी मानी जाती है और जिनकी पहल से समूचे राष्ट्र और प्रदेश में जनकल्याणकारी योजनाओं की बयार चल रही है । साथ ही प्रदेश की विष्णुदेव साय की सुशासन की सरकार है। निश्चित ही हम निकाय और त्रिस्तरीय पंचायत चुनाव 2025 में जोरदार जीत दर्ज करने जा रहे हैं। नामांकन रैली में शामिल त्रिस्तरीय चुनाव प्रभारी कृष्ण बिहारी जायसवाल ने कहा की कार्यकर्ताओं की मेहनत और प्रत्याशियों की साफ सुथरी छवि के साथ केंद्र की मोदी सरकार की योजनाएं और प्रदेश की विष्णुदेव साय की सुशासन की सरकार त्रिस्तरीय चुनाव को जीत के रूप सफलता दिलाने जा रही है ।

30 जनवरी से 28 मार्च तक ध्वनि विस्तारक यंत्रों पर प्रतिबंध

मीडिया ऑडीटर, एमसीबी (निप्र)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मण्डल ने 9 दिसम्बर 2024 को हाईस्कूल एवं हायर सेकेण्डरी की मुख्य परीक्षा वर्ष 2025 की समय-सारणी जारी किया है जिसके अनुसार 01 मार्च 2025 से 28 मार्च 2025 तक परीक्षा का आयोजन निर्धारित की गई है, जिसके फलस्वरूप् विद्यार्थियों के अध्ययन में व्यवधान न हो इस हेतु कोलाहल नियंत्रण अधिनियम-1985 की धारा 5(1)(2), धारा-6 एवं धारा 10(2) के तथा ध्वनि प्रदूषण (विनियमन तथा नियत्रंण) नियम, 2000 में उल्लेखित प्रावधानों के साथ पठित भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 की धारा 152 (पूर्व में भारतीय दण्ड संहिता की धारा 133) के अंतर्गत प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करते हुए जिला मनेंद्रगढ़-चिरमिरी-भरतपुर में जिला दण्डाधिकारी डी. राहुल वेंकट ने आदेश जारी किया है कि सम्पूर्ण जिले में 30 जनवरी 2025 से 28 मार्च 2025 की अवधि में (अधिनियम की धारा 13 (1)उल्लेखित) अवसरों को छोड़कर अधिनियम की धारा 2 क, ख, एवं ग के अंतर्गत परिभाषित कोलाहल एवं समस्त ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग पर पूर्ण समय के लिए प्रतिबंध रहेगा। उक्त आदेश का उल्लंघन अधिनियम की धारा 15 के अधीन दंडनीय है। उपरोक्तानुसार अधिनियम की धारा-2 घ की शक्तियों का प्रयोग करते हुए अधिनियम की धारा (7) के प्रयोजन के लिए उपयुक्त अवसरों पर सीमित अवधि के लिए अनुज्ञा देने हेतु अनुविभागीय दण्डाधिकारी को स्थानीय क्षेत्राधिकारी के अंतर्गत निहित अधिकारों की शक्तियों का प्रयोग करने हेतु सशक्त किया है।

संसद में राष्ट्रपति का अभिभाषण, सोनिया ने बेचारी कहा

नई दिल्ली (एजेंसी)। 18वीं लोकसभा के बजट सत्र का आज पहला दिन था। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद के दोनों सदनों लोकसभा और राज्यसभा के जॉइंट सेशन में 59 मिनट का अभिभाषण दिया। उनके इस अभिभाषण पर कांग्रेस नेताओं की टिप्पणी पर विवाद हो गया। सोनिया गांधी ने द्रौपदी मुर्मू के लिए बेचारी शब्द इस्तेमाल किया। वहीं राहुल ने भाषण को बोरिंग बताया। भाजपा ने इसे आदिवासी समाज का अपमान बताया और माफी की मांग की। प्रधानमंत्री मोदी ने भी कहा कि राष्ट्रपति के लिए ऐसे बयान गरीबों और आदिवासियों का अपमान है। वहीं राष्ट्रपति भवन के प्रेस सेक्रेटरी ने भी सोनिया गांधी के बयान पर आपत्ति जताई। उन्होंने कहा- विपक्षी सांसदों का बयान दुर्भाग्यपूर्ण और राष्ट्रपति की गरिमा को ठेस पहुंचाने वाला है। मोदी बोले- इस सत्र में कई ऐतिहासिक बिल पेश किए जाएंगे संसद में राष्ट्रपति के अभिभाषण से पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सदन के बाहर मीडिया को संबोधित किया था। पीएम ने कहा- इस सत्र में कई ऐतिहासिक बिल पेश किए जाएंगे। हर नारी को सम्मानपूर्ण जीवन मिले उस दिशा में इस सत्र में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए जाएंगे। रिफॉर्म, परफॉर्म और ट्रांसफॉर्म करेंगे।

मोदी बोले-आप-दा ने दिल्ली का पैसा लूट लिया

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आज द्वारका में रैली की। उन्होंने कहा कि कांग्रेस के शाही परिवार का अहंकार देश ने फिर देखा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने संसद को संबोधित किया।

उनकी मातृभाषा हिंदी नहीं है, लेकिन उन्होंने बेहतरीन भाषण दिया, लेकिन कांग्रेस का शाही परिवार उनके अपमान पर उतर आया है। राष्ट्रपति ओडिशा आदिवासी परिवार से निकलकर यहां तक पहुंची हैं। ये देश के 10 करोड़ आदिवासियों का अपमान है।

जो जमीन से उठकर ऊपर आते हैं, उनको कांग्रेस का शाही परिवार पसंद नहीं करता। गरीब, दलित, आदिवासी और ओबीसी समाज से जो भी लोग आगे बढ़ते हैं, कांग्रेस उनको अपमानित करती है। कांग्रेस और आपदा दोनों में बहुत अहंकार है। ये आप-दा वाले खुद को दिल्ली का मालिक बताते हैं। कांग्रेस वाले खुद को देश का मालिक समझते

हैं। उन्होंने कहा कि आप-दा वालों ने दिल्ली को अपनी राजनीति चमकाने का एटीएम बना लिया है। इन लोगों ने दिल्ली का पैसा निचोड़ लिया है, लूट लिया है। जिन्होंने दिल्ली को लूटा है, उन्हें लौटाना ही पड़ेगा। आप-दा वालों के हर घोटाले की जांच होगी दिल्ली में घोटाले करके ये आप-दा वाले कालेधन से देश के दूसरे राज्यों में राजनीति चमकाते हैं। विधानसभा के पहले सत्र में ही सीएजी रिपोर्ट टेबल होगी। इसमें आप-दा सरकार के घोटालों का जिक्र है। हर भ्रष्टाचार की जांच होगी।

इन्फ्रास्ट्रक्चर बजट नहीं बढ़ाया पिछले सालों में आप-दा वालों ने इन्फ्रास्ट्रक्चर बजट नहीं बढ़ाया है। इस साल भी उन्होंने इसके लिए फंड नहीं दिया। ये जनता का पैसा जनता के विकास के लिए नहीं बल्कि अपना प्रचार करने में खर्च करते हैं।

आप ने प्रचार में पैसा खर्च किया ये टीवी पर, अखबारों में, सड़कों के किनारे अपने चेहरे चमकाने के लिए पानी की तरह पैसा बहा रहे हैं, लेकिन आपकी गली, नाली, सीवर, सड़क, पाइपलाइन, इनको बनाने के लिए आप-दा वाले पैसा नहीं देते।

महाराष्ट्र में जीबी सिंड्रोम से 6 दिन में 3 मौतें

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के पुणे, पिंपरी चिंचवाड़ और दूसरे इलाकों में गुइलेन-बैरे सिंड्रोम के मामले बढ़कर 130 हो गए हैं। इनमें से 20 मरीज वेंटिलेटर पर हैं। 29 जनवरी को 3 केस सामने आए थे। कल एक भी मामला सामने नहीं आया। अब तक 3 लोगों की मौत हो चुकी है। 30 जनवरी को स्वास्थ्य विभाग के जारी बुलेटिन के मुताबिक राज्य में तक्रसिंड्रोम के कारण पिंपले गुरव में 36 साल के व्यक्ति, पुणे में 56 साल की महिला और सोलापुर में 40 साल के व्यक्ति की मौत हो चुकी है। अधिकारियों के मुताबिक, 130 मरीजों में पुणे नगर निगम के 25 मरीज हैं। निगम में जोड़े गए गांवों से 74 मरीज हैं। पिंपरी-चिंचवाड़ नगर निगम के 13 मरीज हैं। पुणे ग्रामीण से और अन्य जिलों से 9-9 मरीज हैं। तेलंगाना में पहला केस सामने आया है। सिद्दीपेट जिले में 25 वर्षीय महिला को भर्ती कराया गया है। डिप्टी सीएम अजीत पवार ने गुरुवार को पुणे में जिला योजना समिति की बैठक की। उन्होंने अधिकारियों के निर्देश दिया कि मरीजों से ज्यादा फीस लेने वाले प्राइवेट अस्पतालों के खिलाफ एक्शन लें। पवार पुणे जिले के संरक्षक मंत्री भी हैं।

शंभू बॉर्डर पर एक और किसान की मौत

चंडीगढ़ (एजेंसी)। पंजाब और हरियाणा के शंभू बॉर्डर पर चल रहे किसान आंदोलन के बीच एक और किसान की मौत हो गई है। किसान की जान हॉर्ट अटैक आने से गई है। किसान का नाम प्रगट सिंह है जो अमृतसर के गांव कक्कड़ तहसील लोपोके का रहने वाला था। किसान 2 एकड़ जमीन का मालिक था। वह 2 बच्चों का पिता था।

पंजाब और हरियाणा के शंभू और खनौरी बॉर्डर पर चल रहे किसान आंदोलन-2 को 13 फरवरी को एक साल पूरा होने जा रहा है। ऐसे में दोनों मोर्चों पर किसानों की संख्या बढ़ाई जा रही है।

साथ ही 11 फरवरी से 13 फरवरी तक होने वाली तीन किसान महापंचायतों को सफल बनाने के लिए किसान नेता पूरी

रणनीति में जुटे हुए हैं। किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल का अनशन आज (शुक्रवार) 66वें दिन में प्रवेश कर गया है।

हालांकि भूख हड़ताल के कारण डल्लेवाल का शरीर कमजोर हो गया है। इसके कारण उन्हें बुखार आ गया है, वह जरा सी भी हरकत बर्दाश्त नहीं कर पा रहे हैं। 14 फरवरी को केंद्र सरकार ने चंडीगढ़ में किसानों के साथ बैठक करने का फैसला किया है। इससे पहले किसान बॉर्डर पर बड़ी संख्या में जुटकर यह दिखाने की कोशिश कर रहे हैं कि आंदोलन को भले ही एक साल हो गया है। लेकिन उनके हौसले अभी भी बुलंद हैं। साथ ही वे लंबी लड़ाई लड़ने के लिए तैयार हैं।

दूसरी बात यह कि किसान बिल्कुल भी आक्रामकता नहीं दिखा रहे हैं। वे बिल्कुल शांतिपूर्ण तरीके से मोर्चे पर डटे हुए हैं। वहीं, जिस तरह से डल्लेवाल का अनशन चल रहा है। उसने सरकार को सोचने पर मजबूर कर दिया है। डल्लेवाल ने खुद लोगों को संदेश भेजकर इस आंदोलन में शामिल होने को कहा है।

केजरीवाल के 7 विधायकों का इस्तीफा, पार्टी भी छोड़ी

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा चुनाव से 5 दिन पहले आम आदमी पार्टी के 7 मौजूदा विधायकों ने पार्टी से इस्तीफा दे दिया है। इन सभी ने विधानसभा चुनाव में टिकट न मिलने और,क्रमें भ्रष्टाचार को इस्तीफे की वजह बताई। महरौली से 2 बार के पार्टी विधायक नरेश यादव ने कहा, आप का उदय भ्रष्टाचार के खिलाफ हुए अन्ना आंदोलन से भारतीय राजनीति से भ्रष्टाचार को मुक्त करने के लिए हुआ था। लेकिन अब मैं बहुत दुखी हूं कि भ्रष्टाचार आम आदमी पार्टी बिल्कुल भी कम नहीं कर पाई, बल्कि आप ही भ्रष्टाचार के दलदल में लिप्त हो चुकी है। उधर, विधायकों के पार्टी से इस्तीफे पर,क्र विधायक ऋतुराज झा ने भाजपा पर विधायकों को लालच देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, मुझे भी पार्टी छोड़ने का लालच दिया गया था। लेकिन मैं आखिरी दम तक आप में रहूंगा। वहीं, दिल्ली विधानसभा स्पीकर राम दिल्ली स्पीकर राम निवास गोयल ने कहा- मुझे विधायकों के इस्तीफे की जानकारी नहीं है। मैं 5 बजे सेक्रेटेरिएट से निकल गया था। उसके बाद इस्तीफा दिया होगा आप ने 21 नवंबर से 15 दिसंबर के बीच यानी 25 दिनों में कुल 4 लिस्ट में 70 प्रत्याशियों के नाम घोषित किए थे।

रामेश्वरम के पम्बन ब्रिज पर ट्रेन का ट्रायल हुआ

रामेश्वरम (एजेंसी)। तमिलनाडु के रामेश्वरम में बने नए पम्बन रेलवे ब्रिज पर शुक्रवार को रामेश्वरम एक्सप्रेस ट्रेन का सफल ट्रायल किया गया। ट्रेन को मंडपम से रामेश्वरम रेलवे स्टेशन तक ले जाया गया। इसमें कोई यात्री नहीं था। 2 साल बाद ट्रेन सेवा फिर से शुरू होने से स्थानीय लोगों में खुशी है। इसके अलावा वर्टिकल लिफ्ट अप ब्रिज को पहली बार इंडियन कोस्ट गार्ड की पेट्रोलिंग बोट के लिए ऊपर उठाया गया। इसके बाद बोट ब्रिज के नीचे से गुजरी। पम्बन ब्रिज इंजीनियरिंग की अद्भुत मिसाल है। ये ब्रिज 2 किमी लंबा है, जो बंगाल की खाड़ी पर बना हुआ है। इसे मौजूदा पम्बन ब्रिज के समानांतर बनाया गया है। इसमें समुद्र के पार 100 स्पैन हैं, जिनमें से 99 स्पैन 18-3 मीटर और एक स्पैन 72-5 मीटर माप का है। पम्बन ब्रिज देश का पहला वर्टिकल लिफ्ट अप ब्रिज है, जो 531 करोड़ रुपए की लागत से बनकर तैयार हुआ है। ये ब्रिज रामेश्वरम को तमिलनाडु की मुख्य भूमि से जोड़ता है।

राम रहीम बोला- विराट कोहली ने मुझसे गुरुमंत्र लिया

हिसार (एजेंसी)। डेरा सच्चा सौदा चीफ राम रहीम ने दावा किया है कि भारतीय क्रिकेट विराट कोहली ने उससे गुरुमंत्र लिया है। राम रहीम ने डेरा सिरसा से ऑनलाइन सत्संग में कहा- 'विराट कोहली 2010 में यहां आए थे। उससे पहले 2007-08 में आए थे। फिर उन्होंने गुरुमंत्र भी लिया। ऐसे और भी क्रिकेट प्लेयर हैं।'' राम रहीम ने आगे कहा- 'यहां हिंदुस्तान-पाकिस्तान का मैच हुआ था। उसके पाकिस्तानी प्लेयर भी गुरुमंत्र यानी कलमा से जुड़े थे। हालांकि, वे मुस्लिम प्लेयर थे। ऐसे बहुत सारे प्लेयर हैं। जो आज भी खेलते हैं। उनको देखकर अच्छा लगता है।'' करीब 8 साल पहले भी राम रहीम ने दावा किया था उसके पास विराट कोहली समेत जहीर खान, शिखर धवन और यूसुफ पठान जैसे खिलाड़ी सीखने आते थे। राम रहीम ने कहा था कि खिलाड़ियों की ट्रेनिंग के वीडियो उसके पास हैं। उसने कहा कि खिलाड़ी चाहे उसका नाम लें या नहीं, ये उनकी मर्जी, लेकिन उसने उन्हें सिखाया है। बता दें कि साध्वियों के यौन शोषण और पत्रकार छत्रपति हत्याकांड में राम रहीम रोहतक की सुनारिया जेल में उम्रकैद काट रहा है।

न्यायिक आयोग के सवालों के जवाब नहीं दे पाए अफसर, पूछा- महाकुंभ में कहां-कहां घटना हुई?

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ में 29 जनवरी को हुई भगदड़ की जांच करने शुक्रवार दोपहर करीब ढाई बजे न्यायिक आयोग की टीम पहुंची। आयोग में रिटायर्ड जज हर्ष कुमार के अलावा पूर्व डीजी वीके गुप्ता और रिटायर्ड आईएएस डीके सिंह शामिल हैं सर्किट हाउस में न्यायिक आयोग के तीनों सदस्यों ने बैठक की। इसमें कमिश्नर प्रयागराज जोन विजय विश्वास पंत, मेला अधिकारी विजय किरन आनंद, एडीजी प्रयागराज जोन भानु भास्कर, डीआईजी वैभव कृष्ण के साथ ही पुलिस के अन्य अफसर शामिल हुए। सूत्रों ने बताया कि मेला से जुड़े अधिकारी आयोग के सवालों का सही से जवाब तक नहीं दे पाए। सभी अधिकारी अपने कामों की वाहवाही करने में ही जुटे थे। इस पर आयोग ने कहा कि अगर सब ठीक था तो भगदड़ कैसे हुई? 31 करोड़ से ज्यादा संगम में डुबकी लगा चुके महाकुंभ के 19वें दिन शुक्रवार को अब तक 1.40 करोड़ लोग स्नान कर चुके हैं। 13 जनवरी से अब तक यह आंकड़ा 31 करोड़ को पार कर गया है। आज किन्नर अखाड़े की आचार्य महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने महामंडलेश्वर और श्रीमहंत बनाने के समारोह में नृत्य किया।

आईएसएस पर जाने वाले पहले भारतीय होंगे शुभांशु शुक्ला

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन एयरफोर्स के ऑफिसर शुभांशु शुक्ला को नासा के एग्जियम मिशन 4 के लिए पायलट चुना गया है। जल्द ही वे स्पेस एक्स ड्रैगन स्पेसक्राफ्ट को लेकर इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर जाएंगे। शुभांशु आईएसएस पर जाने वाले पहले भारतीय होंगे। यह मिशन 14 दिन तक चलेगा। इसके तहत रिसर्च की जाएगी। शुभांशु इसरो के मिशन गगनयान के लिए ट्रेनिंग ले रहे हैं। मिशन की कमांड पैगी व्हिटसन संभालेंगी । शुभांशु पायलट होंगे। इनके साथ मिशन स्पेशलिस्ट स्लावोज उजनांस्की-विश्निवस्की और तिबोर कापू अप्रैल और जून 2025 के बीच एग्जियम मिशन-4 पर जाएंगे। मिशन में भारत के अलावा पोलैंड-हंगरी के एस्ट्रोनॉट्स भी कमांडर पैगी व्हिटसन-पैगी ने Ax-2 मिशन की कमांडर के रूप में काम किया है। पैगी ने नासा के एक मिशन में 675 दिन काम किया है। वे अमेरिका की सबसे अनुभवी अंतरिक्ष यात्री हैं।

पायलट शुभांशु शुक्ला- शुभांशु भारतीय वायुसेना में पायलट हैं।

फिरोजपुर में धुंध में कैंटर-पिकअप की टक्कर, 11 की मौत

फिरोजपुर (एजेंसी)। पंजाब के फिरोजपुर में आज सुबह करीब 8 बजे एक बोलेरो पिकअप और कैंटर की टक्कर हो गई। इसमें 11 लोगों की मौत हो गई। जबकि, 15 लोग घायल हो गए। यह हादसा फिरोजपुर-फाजिल्का रोड पर गांव मोहन के उताड़ के पास हुआ। हादसे के वक्त पिकअप में 25 से ज्यादा लोग सवार थे। इनमें से मरने वालों की लाशें सड़क किनारे बिखरी पड़ी मिलीं।

जबकि, जख्मी लोगों को पुलिस ने राहगीरों की मदद से अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने आशंका जताई है कि हादसा धुंध के कारण हुआ है। हालांकि, पुलिस पूरे मामले की जांच कर रही है। मरने वालों में एक सुखविंदर नाम का व्यक्ति भी शामिल है, जोकि पांच बहनों का इकलौता भाई था। हादसे को लेकर पंजाब के सीएम सरदार भगवंत सिंह मान ने दुख जताया है। उन्होंने कहा- फिरोजपुर में आज सुबह कैंटर और पिकअप ट्रक के बीच टक्कर होने से बड़ा हादसा हो गया। जिसमें एक शादी समारोह में जा रहे वेटरों की दुखद मौत की खबर आई है और कुछ लोग घायल बताए जा रहे हैं। मैं ईश्वर से दिवंगत आत्माओं की शांति एवं घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता हूँ।

जम्मू-कश्मीर में चिल्लई कलां खत्म,7 राज्यों में कोहरे का अलर्ट

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर में 30 जनवरी को चिल्लई कलां (बहुत ज्यादा ठंड) का दौर खत्म हुआ। आखिरी दिन ज्यादातर जिलों में धूप खिली। हालांकि, शाम होते-होते आसमान में बादल छाए। ऐसे में आने वाले दिनों में बारिश की संभावना है। चिल्लई कलां के पहले ही दिन जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में पारा -8.5डिग्री रहा था। इसने श्रीनगर का 50 साल पुराना रिकॉर्ड तोड़ा था। चिल्लई कलां के दौरान जम्मू-कश्मीर में बहुत ज्यादा बर्फबारी नहीं हुई और न ही बारिश

हुई है। जनवरी में बहुत कम बारिश हुई। 1 फरवरी और 3 फरवरी को दो नए वेस्टर्न डिस्टर्बेंस एक्टिव होंगे। इसका असर देश के उत्तर-पश्चिमी राज्यों जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान में देखने को मिलेगा।

महाकुंभ- श्रद्धालुओं के खाने में बालू डालने वाला इंस्पेक्टर सस्पेंड

प्रयागराज (एजेंसी)। प्रयागराज महाकुंभ में बुधवार को भगदड़ के बाद आज गुरुवार को भीड़ कम है। मेले में आने-जाने के रास्ते अलग कर दिए गए हैं। प्रयागराज शहर में गाड़ियों की एंट्री पर रोक है। मेला क्षेत्र को पूरी तरह से नो-व्हीकल जोन घोषित कर दिया है। वीआईपी पास भी रद्द कर दिए गए हैं। यह नियम 4 फरवरी तक लागू रहेंगे। ज्यादातर गाड़ियां शहर की सीमाओं पर फंसी हैं। अखिलेश यादव ने एक वीडियो एक्सपर शेयर किया। लिखा, ये दुर्भाग्यपूर्ण है कि जो लोग महाकुंभ में फंसे लोगों के लिए, भोजन-पानी की व्यवस्था कर रहे है, उनके सदप्रयासों के ऊपर राजनीतिक विद्वेष वश मिट्टी डाल दी जा रही है। जनता संज्ञान ले। इसके बाद गंगापार के पुलिस उपाधीक्षक ने एसीपी सोरांव की रिपोर्ट के आधार पर थाना प्रभारी सोरांव ब्रजेश तिवारी को सस्पेंड कर दिया है। वहीं किन्नर अखाड़ा ने आज चार महामंडलेश्वर और चार श्रीमहंत बनाए। सभी महामंडलेश्वर और श्रीमहंतों का इसके पहले पिण्ड दान और संन्यास दीक्षा संगम पर विधि विधान से हुआ। योगी सरकार ने भगदड़ हादसे की जांच के लिए न्यायिक आयोग बनाया है। रिटायर्ड जज हर्ष कुमार के नेतृत्व में तीन सदस्यीय जांच कमेटी गठित की है। कमेटी कल, 31 जनवरी को कमेटी महाकुंभ आएगी और भगदड़ की जांच करेगी।

पुंछ में घुसपैठ नाकाम, सुरक्षाबलों ने 2 आतंकी मारे

जम्मू (एजेंसी)। कश्मीर के पुंछ में सुरक्षाबलों ने घुसपैठ को नाकाम कर 2 आतंकियों को मार गिराया। आतंकी एलओसी से घुसपैठ की कोशिश कर रहे थे। जब सुरक्षाबलों ने रोका तो फायरिंग शुरू कर दी। जवाबी कार्रवाई में दो आतंकी मारे गए। हालांकि एक आतंकी पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर में भाग गया। जम्मू के सिक्योरिटी स्पोक्स पर्सन ने बताया कि घटना देर

शाम की है। पुंछ जिले के खारी करमारा इलाके में घुसपैठ की कोशिश कर रहे थे। कश्मीर के सोपोर में सुरक्षाबलों और आतंकियों के बीच 19 जनवरी की शाम को भी हुई थी। इस दौरान सुरक्षाबलों ने 2 आतंकियों की घेराबंदी की थी। हालांकि दोनों भागने में कामयाब रहे थे। सुरक्षाबलों को आतंकवादियों का इनपुट मिला था। पुलिस ने बताया था कि इनपुट के आधार पर सुरक्षाबल सोपोर के जालोरा गुज्जरपति में सर्च ऑपरेशन कर रहे थे। इसी दौरान आतंकियों ने सुरक्षाबल के जवानों पर फायरिंग कर दी। काफी देर तक दोनों ओर से फायरिंग के बाद आतंकी भागने में कामयाब रहे।

संक्षिप्त समाचार

आईपीएल में श्रेयस के साथ खेलने को लेकर उत्साहित हैं सूर्यांश

मुंबई (एजेंसी)। मुंबई के युवा ऑलराउंडर सूर्यांश शेडगे आजकल इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) की तैयारियों में लगे हैं। सूर्यांश को पहली बार आईपीएल खेलने का अवसर मिला है। उन्हें गत वर्ष हुई मेगा नीलामी में पंजाब किंग्स ने खरीदा था। सूर्यांश आईपीएल में कप्तान श्रेयस अय्यर के साथ खेलने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। इसे युवा क्रिकेटर ने घरेलू क्रिकेट में पिछले दिनों मुंबई की ओर सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी में भी काफी अच्छा प्रदर्शन किया था। सूर्यांश ने फाइनल में ऑलराउंड प्रदर्शन करते हुए केवल 15 गेंद में नाबाद 36 रन बनाने के साथ ही 32 रन देकर एक विकेट भी लिया था। अय्यर की कप्तानी में सूर्यांश ने घरेलू क्रिकेट में खेला है। ऐसे में अब उनका मानना है कि अय्यर के आईपीलए में पंजाब किंग्स का कप्तान हाने से उन्हें खिलाड़ियों के साथ तालमेल बिठाने में सहायता मिलेगी। उन्होंने कहा, 'अगर आप पिछले कुछ साल में पंजाब किंग्स के रिकॉर्ड को देखें तो वे हमेशा नयी प्रतिभाओं में निवेश करते हैं और घरेलू क्रिकेट पर बारीकी से नजर रखते हैं। शेडगे ने कहा, 'मैं फ्रेंचाइजी का हिस्सा बनकर उत्साहित हूं। अय्यर के कप्तान होने से मेरे लिऐ और भी आसान इसलिए रहेगा क्योंकि मैं उन्हें अच्छी तरह जानता हूं। वह टीम के कोच रिकी पोंटिंग के मार्गदर्शन में काम करने को लेकर खास तौर पर उत्साहित हैं। उन्होंने कहा, ' पोंटिंग महान खिलाड़ी हैं। संन्यास के बाद वह लगातार क्रिकेट से जुड़े रहे हैं। ऐसे में उनसे काफी कुछ सीखने को मिलेगा।

पार्थिव ने पंड्या की बल्लेबाजी के तरीके पर सवाल उठाये

नई दिल्ली (एजेंसी)। पूर्व विकेटकीपर बल्लेबाज पार्थिव पटेल ने ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या पर निशाना साधा है। पार्थिव ने कहा है कि पंड्या ने इंग्लैंड के बीच तीसरे टी20 में ठीक से स्ट्राइक रोटेट नहीं की । इस मैच में पंड्या ने हालांकि 40 रन निकले। इसके बाद भी पार्थिव ने उनकी बल्लेबाजी के तरीके पर नाराजगी जतायी है। इस पूर्व विकेटकीपर के अनुसार पंड्या ने बीच के ओवर्स में स्ट्राइक रोटेट नहीं की। उन्होंने कई बार एक रन लेने से इनकार किया। वह ज्यादा गेंदे खेले इसके कारण बाकी बल्लेबाजों पर दबाव बना। पार्थिव के मुताबिक टीम इंडिया को हार्दिक पंड्या के बल्लेबाजी के तरीके पर ध्यान देना चाहिये। पार्थिव ने कहा , मैं समझता हूं कि जब आप अपना समय ले रहे हैं तो आप पिच की गति और उछाल से अभ्यस्त होना चाहते हैं पर आप जमने के लिए ही 20 से 25 गेंदें नहीं ले सकते। अगर आप ऐसा नहीं करते हैं। आप बड़े शॉट नहीं खेलना चाहते ये ठीक है पर आपको फिर भी स्ट्राइक रोटेट तो करते रहना होगा। आप लगातार तीन या चार डॉट बॉल नहीं खेल सकते हैं। पटेल ने कहा कि, आप पंड्या को 34 गेंदों में 40 रन बनाते हुए देख सकते हैं पर उनकी पारी की डॉट बॉल से अन्य बल्लेबाजों पर भी दबाव पड़ता हैं।

माइकल वॉन ने दी सूर्यकुमार को सलाह, हर गेंद पर शॉट न लगायें

लंदन (एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व क्रिकेटर माइकल वॉन ने भारतीय टी20 टीम के कप्तान सूर्यकुमार यादव को अपना फार्म हासिल करने के लिए विकेट पर टिककर खेलने की सलाह दी है। वॉन ने कहा कि हर गेंद पर शॉट नहीं लगाया जा सकता और ये बात सूर्यकुमार को समझनी होगी। वान ने कहा कि उन्हें अपनी बल्लेबाजी में संतुलित रवैया अपनाना होगा। सूर्यकुमार इंग्लैंड के खिलाफ तीनों ही टी20 मैचों में रन नहीं बना पाये हैं। इसी को लेकर वॉन ने कहा कि सूर्यकुमार मैदान पर उतरते ही चौके , छक्के लगाने के प्रयास में लग जाते हैं जिससे उन्हें नुकसान हो रहा है। इसलिए उन्हें शॉट लगाने से पहले क्रीज पर कुछ समय बिताना चाहिये। सूर्यकुमार अब तक इस सीरीज में बल्लेबाजी के दौरान एक बार भी 20 रन तक नहीं बना पाये हैं। उसके आउट होने का मुख्य कारण गलत समय पर आक्रामक शॉट लगाना रहा है, या तो गेंद को पीछे की तरफ ले जाना या फिर हवा में गलत तरीके से मारना। वॉन ने कहा कि भारतीय टीम पावरप्ले में अधिक से अधिक रन बनाना चाहती है पर सूर्यकुमार को टीम में अपना पूरा योगदान देने के लिए अपनी भूमिका को बेहतर ढंग से निभाना चाहिये। वॉन ने कहा, लगातार कुछ मौकों पर वह काफी आसानी से आउट हो रहे हैं। जब आप कहते हैं कि हर समय आक्रामक रहें, तो इसका मतलब है कि सही गेंद का चयन करके आक्रामक होना चाहिये। आप हर गेंद को बाउंड्री पर नहीं मार सकते पर इस युग के कुछ खिलाड़ियों में इतना कौशल और प्रतिभा है कि उन्हें लगता है कि वे ऐसा कर सकते हैं जबकि संभव नहीं है। उन्होंने कहा, भारत के वापस आने के लिए और मुझे भरोसा है कि वे ऐसा करेंगे। इसके लिए सूर्यकुमार को यह कहने की ज़रूरत होगी, ठीक है, मुझे बस 15 गेंदें खेलनी हैं, खुद को तैयार करना है, मैदान के आयामों को देखना है। उसके पास इतना खेल है कि वह हवा में बाउंड्री मारने के मोड में आ जाए, हम जानते हैं कि वह ऐसा कर सकता है। उन्होंने कहा कि भारतीय टीम की बल्लेबाजी इकाई ने पूरी सीरीज में एकजुट होकर नहीं खेला है उन्हें जिन मैचों में जीत मिली है वह सामूहिक प्रदर्शन की जगह पर व्यक्तिगत प्रतिभा के माध्यम से आई है।

उस्मान वाजा ने श्रीलंका के खिलाफ जड़ा दोहरा शतक

ऑस्ट्रेलिया के ओपनर बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा ने श्रीलंका के खिलाफ 232 रन की बेहतरीन पारी खेली। ख्वाजा ने अपने इस प्रदर्शन से अपने आलोचकों का मुंह बंद कर दिया है। क्योंकि इससे पहले बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी की पांच पारियों में ख्वाजा कुल 184 रन ही बना पाए थे। जिससे उनकी काफी आलोचना हुई। वहीं अब उन्होंने श्रीलंका के खिलाफ इतिहास रच दिया। बीजीटी में 10 पारियों में 200 रन भी नहीं बनाने वाले ख्वाजा ने श्रीलंका के खिलाफ टेस्ट सीरीज की पहली पारी में ही दोहरा शतक जड़ दिया। वे ऑस्ट्रेलिया के लिए श्रीलंका में टेस्ट क्रिकेट में डबल सेंचुरी लगाने वाले पहले क्रिकेटर बन गए हैं। उन्होंने टेस्ट क्रिकेट में अपनी डूबती नैया को भी पार लगाई। उस्मान ख्वाजा ने 290 गेंदों में 16 चौके और एक छक्के की मदद से अपना दोहरा शतक पूरा किया, जो टेस्ट क्रिकेट में उनका पहला दोहरा शतक है। इस मैच में ट्रैविस हेड के साथ ओपनिंग करने वाले उस्मान ख्वाजा पहले दिन की तरह दूसरे दिन भी बेहतरीन लय में नजर आए।

बैंक के निपटा लें जरुरी काम, फरवरी में आठ दिन बैंक में रहेंगी छुट्टियां

नई दिल्ली (एजेंसी)। नए साल का जनवरी माह खत्म होने वाला है और फरवरी की शुरुआत होने वाली है। फरवरी में बैंकों में छुट्टियों की भरमार रहेगी। इस महीने के 28 दिनों में से 8 दिन बैंकों में कामकाज नहीं होगा। शनिवार और रविवार के साप्ताहिक अवकाश के अलावा कई त्योहारों और खास दिनों में बैंक बंद रहेंगे। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) हर कैलेंडर वर्ष में बैंकों की छुट्टियों की सूची जारी करता है। पूरे देश के बैंक फरवरी में 8 दिन बंद नहीं रहेंगे। आरबीआई द्वारा जारी हॉलीडे लिस्ट में से कई अवकाश राष्ट्रीय स्तर के हैं। उस दिन पूरे देश में बैंकिंग सेवाएं बंद रहेंगी। वहीं, कुछ अवकाश स्थानीय या क्षेत्रीय स्तर के होते हैं। उन दिनों को केवल उससे जुड़े राज्यों में ही बैंक शाखाएं बंद होती हैं। रविवार के अलावा हर महीने के दूसरे और चौथे शनिवार को भी देशभर के बैंक बंद रहते हैं। बैंकों में छुट्टी होने से कई बार जरूरी काम अटक जाते हैं, लेकिन अब बैंकों द्वारा ज्यादातर सर्विसेज को ऑनलाइन करने की वजह से ज्यादा दिक्कत नहीं होती है। खास बात यह है कि छुट्टी वाले दिन बैंकों की ऑनलाइन सर्विसेज चालू रहती हैं। इसलिए आप नेट बैंकिंग, मोबाइल बैंकिंग या यूपीआई के जरिए एक बैंक अकाउंट से दूसरे में पैसे ट्रांसफर समेत कई काम कर सकते हैं।

ये रही छुट्टियों की पूरी लिस्ट, 3 फरवरी, (सोमवार)= अगरतला में सरस्वती पूजा बैंक बंद, 11 फरवरी, (मंगलवार)= चेन्नई में थाई पूसाम बैंक बंद, 12 फरवरी, (बुधवार)=शिमला में गुरु रविदास जयंती बैंक बंद, 15 फरवरी, (शनिवार)= इंफाल में लुई-नगाई-नी बैंक बंद, 19 फरवरी, (बुधवार)= बेलापुर, नागपुर और मुंबई में शिवाजी जयंती बैंक बंद, 20 फरवरी, (गुरुवार)= आइजोल और ईटानगर में राज्य दिवस बैंक बंद। 26 फरवरी, (बुधवार)= महाशिवरात्रि पर अहमदाबाद, आइजोल, बेलापुर, बेंगलुरु, भोपाल, भुवनेश्वर, चंडीगढ़, देहरादून, हैदराबाद (आंध्र प्रदेश), हैदराबाद (तेलंगाना), जयपुर, जम्मू, कानपुर, कोच्चि, लखनऊ, मुंबई, नागपुर, रायपुर, रांची, शिमला, श्रीनगर और तिरुवनंतपुरम में बैंक बंद

28 फरवरी, (शुक्रवार)= गंगटोक क्षेत्र में लोसर के अवसर पर बैंक बंद

केएल राहुल के साथ प्रेग्नेंसी पीरियड का आनंद लेती अथिया

मुंबई (एजेंसी)। क्रिकेटर के एल राहुल की पत्नी और बॉलीवुड अभिनेत्री अथिया शेट्टी इस समय प्रेग्नेंसी पीरियड का आनंद लेती दिख रही हैं। इसकी एक तस्वीर भी सामने आयी है। इसमें अथिया राहुल के साथ अपनी खुशी व्यक्त करती दिख रही हैं। इसी साल ये दोनो माता-पिता बनने वाले हैं। जब से अथिया ने अपनी प्रेग्नेंसी की बात सार्वजनिक की है तभी से हर कोई उनकी तस्वीरें देखने के लिए उत्साहित रहता है। इसी कारण उनकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर छा जाती हैं। ऐसी ही एक तस्वीर अब सामने आयी है। इसमें दोनो को एक दूसरे के साथ समय बिताते देखा गया है। इसमें अथिया ब्लैक एंड आइवरी कलर के आउटफिट में बेबी बंप दिखाती हुई नजर आ रही हैं। अथिया ने इस तस्वीर में ब्लैक टर्टल नेक स्वेटर को फुल लेंथ आइवरी स्कर्ट के साथ पहना है। स्वेटर की स्लीव्स हथेली तक आने से कूल लुक लग रहा है। अथिया शेट्टी अपने मैटरनिटी लुक में टीजिंग एलिमेंट एड करना बिल्कुल भी नहीं भूली। उन्होंने स्टाइलिश अटायर के साथ हैवी गोल्डन ड्रॉप ईयररिंग्स पहने हैं जो 5 लेयर में डिजाइन किए गए हैं।

एफआईएच प्रो हॉकी लीग के भुवनेश्वर चरण में सलीमा की कप्तानी में उतरेगी भारतीय टीम

नई दिल्ली (एजेंसी)। 15 फरवरी से होने वाले एफआईएच प्रो लीग के भुवनेश्वर चरण के लिये भारत की 24 सदस्यीय महिला हॉकी टीम की कप्तानी सलीमा टेटे के पास ही रहेगी। इस टूर्नामेंट के लिए अनुभवी स्ट्राइकर वंदना कटारिया को भारतीय टीम में जगह मिली है जबकि युवा फॉरवर्ड सोनम को भी स्टैंडबाय खिलाड़ी के तौर पर शामिल किया गया है। भारतीय टीम को इस टूर्नामेंट में इंग्लैंड, नीदरलैंड, स्पेन और जर्मनी से दो दो मुकाबले खेलने हैं। भारतीय टीम की उपकप्तानी नवनीत कौर के पास रहेगी। अनुभवी डिफेंडर निक्की प्रधान, ज्योति छत्री , मिडफील्डर बलजीत कौर और फॉरवर्ड मुमताज खान तथा रूतुजा डडास को भी टीम में जगह मिली है। टीम के मुख्य कोच हरेंद्र सिंह ने कहा है कि टीम में अनुभवी और युवा खिलाड़ियों को शामिल किया गया है। ये शीर्ष स्तर के टूर्नामेंट के लिये सबसे जरुरी होता है। साथ ही कहा कि हमारा ध्यान संतुलित टीम पर रहा है जिसमें हर पोजिशन के लिये अच्छे विकल्प उपलब्ध हों।'' गोलकीपर बांवरी सोलंकी, डिफेंडर अक्षता ढेकाले और ज्योति सिंह, फॉरवर्ड साक्षी राणा, अन्नु और सोनम को भी स्टैंडबाय के रूप में शामिल किया गया है। स्टैंडबाय खिलाड़ी के तौर पर शामिल सोनम ने महिला हॉकी इंडिया लीग में शानदार प्रदर्शन किया और वह सबसे अधिक गोल करने वाले खिलाड़ियों की सूची में दूसरे स्थान पर रही थीं। हरेंद्र ने कहा ,'' हमें टीम की तैयारियों पर भरोसा है और हमारा मानना है कि यह विश्व की सर्वश्रेष्ठ टीमों के खिलाफ शानदार प्रदर्शन कर सकती है।'' भारतीय टीम = गोलकीपर = सविता और बिछू देवी खारीबाम डिफेंडर = सुशीला चानू, निक्की प्रधान, उदिता, ज्योति, इशिका चौधरी और ज्योति छत्री मिडफील्डर = वैष्णवी विट्ठल फाल्के, नेहा, मनीषा चौहान, सलीमा टेटे , सुनेलिटा टोप्पो, लालरेम्सियामी, बलजीत कौर, शर्मिला देवी। फॉरवर्ड = नवनीत कौर, मुमताज खान, प्रीति दुबे, रूतुजा पिसाल, ब्यूटी डुंगडुंग, संगीता कुमारी, दीपिका और वंदना कटारिया।

सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन समारोह में निदेशक के तौर पर शामिल हुई सारा

मुम्बई (एजेंसी)। सचिन तेंदुलकर फाउंडेशन (एसटीएफ) की ओर से बीते दिनों मुंबई के बॉम्बे क्लब में एक सामूहिक समारोह आयोजित किया गया था। इसमें सचिन तेंदुलकर की बेटी सारा तेंदुलकर फाउंडेशन में निदेशक की भूमिका में पहली बार शामिल हुईं। इसमें सारा युवाओं से जुड़ने और उनकी आकांक्षाओं को पूरा करने में उनकी मदद करने पर केंद्रित नया एक नया दृष्टिकोण लेकर आई हैं। समारोह खत्म होने के कुछ दिन बाद सारा ने सोशल मीडिया पर समारोह की कुछ तस्वीरें शेयर की हैं। इसमें उनकी एक तस्वीर मां और पिता के साथ है। फाउंडेशन समारोह को सचिन तेंदुलकर की पत्नी अंजलि तेंदुलकर ने भी संबोधित किया और भविष्य की योजनाओं पर बात की। समारोह में कई दिग्गज हस्तियां भी पहुंचीं थीं। मशहूर गायक शंकर महादेवन भी विशेष तौर पर पहुंचे। समारोह में सारा तेंदुलकर की दोस्त भी पहुंची थीं। सारा फाउंडेशन समारोह के दौरान बेहद खुश दिखीं। फाउंडेशन समारोह के अंत में सचिन ने फाउंडेशन से जुड़ी एनजीओ के प्रतिनिधियों के साथ तस्वीरें भी शेयर की। सचिन ने फाउंडेशन शुरू करने के कार्य और भविष्य की योजनाओं पर भी खुली बात की। बहरहाल, समारोह में कोल्डप्ले के मुख्य गायिक क्रिस मार्टिन विशेष तौर पर पहुंचे थे। फाउंडेशन की यात्रा पर विचार करते हुए सचिन ने कहा कि जब मैं आखिरी बार पवेलियन की ओर लौटा, तो मेरे मन में यह भाव था कि मेरी पारी अभी खत्म नहीं हुई है। अंजलि और मेरा यह सपना था कि जरुरतमंदों के लिए कुछ आसान किया जाए और युवा सपने देखने वालों को खुद पर विश्वास करने और उड़ान भरने में मदद की जाए। हमने महसूस किया कि विचार का अंकुरण इसे लागू करने से कहीं ज्यादा आसान था। आखिरकार ये फाउंडेशन अस्तित्व में आया और अब हम अपना काम करते हुए आधा दशक पार कर चुके हैं, आगे भी ये सफलर इसी गति के साथ जारी रहेगा।

चैम्पियंस ट्रॉफी के प्रोमो में बर्फीली हवाओं के बीच बैठे दिखे धोनी

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान महेन्द्र सिंह धोनी आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी 2025 के प्रोमो में एक नये अंदाज में नजर आये हैं। इस प्रोमो को देखकर प्रशंसक उत्साहित हैं। प्रोमो जब खुलता है तो दर्शक पाते हैं कि कैसे धोनी बर्फीली हवाओं के बीच बैठे हैं और चैम्पियंस ट्रॉफी पर बात करते नजर आते हैं। विज्ञापन में धोनी कहते हैं, जब मैं कप्तान था तो कूल रहना आसान था पर प्रशंसक बनकर आईसीसी चैम्पियंस ट्रॉफी देखना आसान नहीं है। भले ही हमारी टीम मजबूत है पर एक मैच भी हार जाएं, तो बाहर हो जाएगी, ऐसे में तनाव होना ही है। इस तनाव ने तापमान इतना बढ़ा दिया है कि हर मैच करो या मरो का हो गया है। इस प्रोमो के दौरान दौरान धोनी को रैफरल लेते हुए भी दिखाया जाता है। तभी एक ट्रक आता है और बहुत सारी बर्फ धोनी पर डालकर चला जाता है। उक्त प्रोमो पर जमकर प्रशंसकों की काफी प्रतिक्रियाएं भी आयी हैं। जहां कई प्रशंसकों ने प्रोमो पर कैप्टन कूल लिखा तो कईयों ने धोनी की इस अदा की सराहना की है। वहीं एक प्रशंसक ने लिखा, चैम्पियंस ट्रॉफी के प्रचार वीडियो में महान धोनी अपने ब्रांड और कौशल का प्रदर्शन करते हुए दिखाई दे रहे हैं। वहीं, दूसरे ने लिखा, मैदान पर कैप्टन कूल, प्रशंसक बनकर बहा रहे पसीना। यहां तक कि चैम्पियंस ट्रॉफी में भी धोनी रेफ्रिजरेशन सिस्टम की जरूरत है। एक अन्य प्रशंसक ने लिखा, धोनी को इस रूप में देखकर आनंद आ गया। चैम्पियंस ट्रॉफी में भारतीय टीम रोहित शर्मा की कप्तानी में उतरेगी। ये टूर्नामेंट पाक में रखा गया है पर भारतीय टीम के मुकाबले दुबई में होंगे। भारतीय टीम ने अंतिम बार चैम्पियंस ट्रॉफी धोनी की कप्तानी में साल 2013 में जीती थी। अब रोहित का लक्ष्य एक बार फिर ये ट्रॉफी जीतना रहेगा।

आदिल रशीद का प्रदर्शन लगातार बेहतर हो रहा : जोस बटलर

राजकोट (एजेंसी)। इंग्लैंड क्रिकेट टीम के कप्तान जोस बटलर ने अपनी टीम के लेग स्पिनर आदिल रशीद की जमकर प्रशंसा की है। बटलर ने कहा कि आदिल हमारी टीम के एक अहम खिलाड़ी हैं। आदिल ने अब तक भारतीय टीम के खिलाफ टी20 सीरीज में अच्छा प्रदर्शन किया है। भारत के खिलाफ तीसरे मैच में चार ओवर में 15 रन देकर एक विकेट लिया। वहीं चेन्नई में दूसरे टी20 में भी उनका इकॉनॉमी रेट चार रन प्रति ओवर से कम था। भारत के खिलाफ सीरीज में वापसी के बाद बटलर ने कहा, 'वह हमारे लिए सबसे अहम खिलाड़ी है और उसके प्रदर्शन में लगातार निखार आ रहा है। उसके पास काफी विविधता है। एक कप्तान के लिए वह किसी ट्रंपकार्ड से कम नहीं है। पिछले दोनों मैचों में उसने शानदार प्रदर्शन किया है। सीरीज में अभी भी भारतीय टीम से 1-2 से पीछे होने के बाद भी बटलर निराश नहीं हैं। उन्होंने कहा कि उनकी टीम सही दिशा में जा रही है। उन्होंने कहा, 'मैं अपने खिलाड़ियों के प्रदर्शन से खुश हूं। लिविंगस्टोन भी पिछले मैच में आक्रामक बल्लेबाजी की। इसके अलावा मार्क वुड भी अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि हम इसी प्रकार से बल्लेबाजी और गेंदबाजी में बेहतर प्रदर्शन कर सीरीज को बराबरी पर लाने का प्रयास करेंगे।

रणजी ट्रॉफी मैच में उमड़ी भीड़, सुरक्षा घेरा तोड़कर विराट के पास पहुंचा एक प्रशंसक

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट टीम के पूर्व कप्तान विराट कोहली एक दशक से अधिक समय बाद यहां के अरुण जेटली स्टेडिमय में रणजी ट्रॉफी मैच खेलने पहुंचे। इस दौरान विराट को देखने भारी तादाद में लोग स्टेडियम पहुंच गये। प्रशंसकों की तादाद इतनी अधिक थी कि स्टैंड दर्शकों से खचाखच भरा नजर आया। प्रशंसक उनकी एक झलक पाने के लिए उमड़ पड़े। इसी दौरान एक प्रशंसक सुरक्षा घेरा तोड़कर मैदान पर विराट के पास पहुंचा और उनके पैस छुए। सुरक्षा अधिकारियों ने किसी प्रकार उसे वहां से हटाया। यह घटना रेलवे की बल्लेबाज के 12वें ओवर में हुई। उस समय विराट दूसरी स्लिप पर फिल्डिंग कर रहे थे। जैसे ही एक प्रशंसक विराट के करीब पहुंचा स्टेडियम में मौजूद लोगों ने चिल्लाना शुरू कर दिया। सुरक्षाकर्मी इस व्यक्ति को हटाने के लिए दौड़े पर कोहली ने उन्हें शांत रहने का इशारा किया। दिल्ली एवं जिला क्रिकेट संघ ने कहा कि कोहली की वापसी पर लगभग 10,000 प्रशंसकों के आने की उम्मीद की थी पर उससे भी कहीं ज्यादा प्रशंसक आ गये। इस प्रकार की भीड़ रणजी ट्रॉफी में नहीं होती। अधिकारियों ने कहा कि स्टेडियम में मैच देखने के लिए 15,000 से अधिक प्रशंसक मौजूद हैं। इसका एक कारण कोई टिकट नहीं होना थी था। इस मैच में शुरुआत से ही दिल्ली के गेंदबाज हावी रहे और उन्होंने रेलवे के बल्लेाजों को खुलकर खेलने का अवसर नहीं दिया। मैच में प्रशंसक अपने पसंदीदा स्टार को देखने के लिए उत्साहित थे और बड़ी संख्या में स्टेडियम में उमड़ पड़े जिससे स्टेडियम के बाहर अफरा-तफरी मच गई। गेट 16 के बाहर भीड़ एक-दूसरे को धक्का दे रही थी, जिसके कारण कुछ प्रशंसक प्रवेश द्वार के पास गिरकर घायल हो गए। पुलिस की एक बाइक भी क्षतिग्रस्त हो गई। अफरा-तफरी में कम से कम तीन लोग घायल हो गए। घायल प्रशंसकों का गेट के पास डीडीसीए सुरक्षा और पुलिस ने इलाज किया। एक प्रशंसक के पैर पर पट्टी भी बांधनी पड़ी। स्थिति को नियंत्रण में लाने की कोशिश करते समय एक सुरक्षा गार्ड भी घायल हो गया।

नागरिक आपूर्ति निगम और सहकारिता विभाग एक-दूसरे पर ठीकरा फोड़ रहे

रीवा में 12 हजार क्विंटल अमानक धान की खरीदी, 40 फीसदी ही ठीक निकल रही

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सहकारिता विभाग और नागरिक आपूर्ति निगम के अधिकारियों-कर्मचारियों की मिली भगत से रीवा और मऊगंज जिले में धान उपार्जन के दौरान 12 हजार क्विंटल अमानक उपज की खरीदी कर ली गई। नागरिक आपूर्ति निगम के आंकड़ों के मुताबिक 12 हजार क्विंटल अमानक धान की साफ-सफाई के बाद मात्र 4 हजार क्विंटल धान ही मानक पाई गई है। फाइलों में दबे आंकडे सार्वजनिक हुए तो अब नागरिक आपूर्ति निगम और सहकारिता विभाग एक-दूसरे पर अमानक धान खरीदी करने का ठीकरा फोड़ने में लगे हैं।

40 फीसदी साफ सुथरी धान प्राप्त हो रही: बताया गया कि इस वर्ष रीवा और मऊगंज में लगभग 802 करोड़ की धान उपार्जित की गई थी, जिसमें लगभग 12,000 क्विंटल धान अमानक स्तर की पाई गई। जिसके बाद अमानक धान की साफ-सफाई का काम शुरू कराया गया। कर्मचारियों की माने तो धान की साफ-सफाई के दौरान लगभग 30 से 40 फीसदी साफ सुथरी धान प्राप्त हो रही है, ऐसे में सवाल यह उठता है कि खरीदी केंद्रों में खरीदी केंद्रों में तैनात किए गए नोडल अधिकारियों के रहते इतनी बड़ी मात्रा में अमानत स्तर की धान कैसे उपार्जित कर ली गई। साफ-सफाई के बाद धान की मात्रा कम होने पर उसकी राशि किससे वसूली जाएगी।

अधिकारी बोले- समितियों से वसूली करेंगे: नागरिक आपूर्ति निगम के जिला प्रबंधक पीयूष माली ने बताया कि 12 हजार क्विंटल अमानक धान की खरीदी की गई है। रीवा और मऊगंज जिले में कई समितियों द्वारा अमानक स्तर की धान खरीदी की गई है। बार-बार दिशा निर्देश दिए जाने के बावजूद जिन समिति प्रबंधकों ने ऐसी लापरवाही की है, उनके विरुद्ध प्रस्ताव तैयार कर वरिष्ठ अधिकारियों के पास भेजा जाएगा। साथ ही अमानक धान के परिवहन और साफ-सफाई में आने वाला खर्च भी समितियों से वसूला जाएगा।

अमानक धान की खरीदी को लेकर जिला प्रबंधक नागरिक आपूर्ति निगम ने सहकारिता विभाग को कई पत्र भी जारी किए थे।

नदी किनारे किशोरी से रेप, घूमने के बहाने साथ ले गया था आरोपी

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। सिविल लाइन थाना अंतर्गत किशोरी से दुष्कर्म का मामला सामने आया है। पीड़िता ने पुलिस को बताया कि आरोपी आरिफ खान 28 जनवरी को उसे बीहर नदी किनारे ले गया। वहां जबरन गलत काम किया। इससे पहले आरोपी नाबालिग को नदी किनारे घुमाने ले गया था। वहां गलत काम करने से पहले मारपीट भी की। आरोपी ने उसे जान से मारने की धमकी दी थी। इसलिए उसने घटना की जानकारी किसी को नहीं दी।

5 महीने पहले हुई थी जान पहचान : सिविल लाइन थाना प्रभारी कमलेश साहू ने बताया कि आरोपी पीड़िता को 5 महीने पहले मिला था। दोनों की जान पहचान हो गई। आरोपी आरिफ ने पहले तो उसे अपना दोस्त बनाया। फिर मौका मिलते ही बीहर नदी के किनारे गलत काम किया। जब वह दोबारा दबाव बनाने लगा तो पीड़िता ने थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई। टीआई ने बताया कि आरोपी 21 साल का है, जो घटना के बाद से ही पीड़िता को डरा धमका रहा था। इसके बाद पीड़िता थाने पहुंची। प्रकरण दर्ज कर ली गई है।

कमिश्नरी में दी गई दो सेवानिवृत्त अधिकारियों को भावभीनी विदाई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित समारोह में दो सेवानिवृत्त अधिकारियों को भावभीनी विदाई दी गई। शासकीय सेवा में अधिवार्षिकी आयु पूरी करने पर कार्यपालन यंत्री लोक निर्माण विभाग मनोज द्विवेदी तथा उप संचालक उद्यानिकी योगेश पाठक को विदाई दी गई। कमिश्नर बीएस जामोद ने शॉल, श्रीफल, स्मृति चिन्ह एवं पुष्पगुच्छ देकर सेवानिवृत्त अधिकारियों को सम्मानित किया।

इस अवसर पर कमिश्नर ने कहा कि आज संभागीय अधिकारियों के परिवार के दो प्रमुख आधार स्तंभ विदा हो रहे हैं। कार्यपालन यंत्री श्री द्विवेदी बहुत ही कार्यकुशल और विभाग के कार्यों के संबंध में अदभुत जानकारी रखते हैं।

निर्माण कार्यों की छोटी से छोटी बात भी पूरी तकनीकी ज्ञान के साथ बता सकते हैं। उप संचालक श्री पाठक ने विभाग में बहुत कम स्टाफ होने के बावजूद रीवा और शहडोल संभाग में बहुत अच्छा कार्य किया। आपके कार्यकाल में ही रीवा की पहचान सुंदरजा आम को जियो टैगिंग के रूप में अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिली। संभाग में आयोजित होने वाले सभी बड़े शासकीय कार्यों में आपने सदैव बढ़चढ़ कर योगदान दिया। कमिश्नर ने दोनों अधिकारियों के स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएं दी।

कार्यक्रम में मुख्य अभियंता संजय खाण्डे, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी, संभागीय प्रबंधक सड़क विकास निगम उमेश सिंह, अधीक्षण यंत्री पीएचई जेएस धुर्वे, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, मुख्य अभियंता ऊर्जा आईके त्रिपाठी, सहायक संचालक कृषि प्रीति द्विवेदी, उप संचालक मछलीपालन अंजना सिंह तथा अन्य अधिकारियों ने दोनों सेवानिवृत्त अधिकारियों के व्यक्तित्व और कार्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में सभी संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

रेल मंत्री से मुलाकात कर विंध्य क्षेत्र में रेल कनेक्टिविटी बढ़ाने की मांग की

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। बीजेपी नेता गौरव तिवारी ने आज रेल मंत्रालय नई दिल्ली में रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव से मुलाकात किया वही गौरव तिवारी ने विंध्य क्षेत्र व रीवा से जुड़ी रेल कनेक्टिविटी को सुव्यवस्थित करने व बढ़ाने का ज्ञापन दिया जिसमें रीवा - आनंद विहार एक्सप्रेस के रैक तत्काल बदलने की माँग के साथ ही विभिन्न गाड़ियों को चलाने की एवं साथ ही कुछ गाड़ियों को नियमित करने की माँग की।

केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बीजेपी नेता गौरव तिवारी के विंध्य क्षेत्र से जुड़ी रेल कनेक्टिविटी के कुछ मांग को शीघ्र ही पूरा किया वही अन्य मांगों को आने वाले समय में पूरा करने का आश्वासन दिया।

गौरव तिवारी ने 2023 में मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल में रेल मंत्री से मुलाकात कर कर रीवा से वंन्देभारत चलाने की मांग की थी जिसको रेल मंत्री ने कम समय में ही पूरा किया था और रीवा से जबलपुर व भोपाल के लिए वंदेभारत ट्रेन चलाई थी। मध्यप्रदेश में रीवा से चलने वाली पहली वन्देभारत ट्रेन है जो आज रेल मंत्रालय को बेहतर मुनाफे दे रही और और विंध्यवासियों के लिए एक बड़ी सौगात साबित हुई है।

समाधान ऑनलाइन के आवेदनों का निराकरण के दिये निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित संभागीय समीक्षा बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की। कमिश्नर ने कहा कि सभी अधिकारी समाधान ऑनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं में लंबित सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों का तत्काल निराकरण करें। अधीक्षण यंत्री पीएचई नलजल योजनाओं से संबंधित सभी प्रकरण दो दिवस में निराकृत कराएं। ग्रामीण विकास विभाग, नगरीय निकाय, राजस्व तथा गृह विभाग से संबंधित आवेदनों का भी तत्परता से निराकरण करें। सभी अधिकारी दिसम्बर और जनवरी माह में प्राप्त सीएम हेल्पलाइन के आवेदनों तथा सौ दिवस से अधिक समय से लंबित प्रकरणों का प्राथमिकता से निराकरण करें।

बैठक में कमिश्नर ने कहा कि सभी कार्यालय प्रमुख सेवानिवृत्त होने वाले शासकीय सेवकों के पेंशन प्रकरण समय पर ऑनलाइन दर्ज करके प्रकरण पेंशन कार्यालय में प्रस्तुत करें। जनवरी माह में सेवानिवृत्त कर्मचारियों के पेंशन प्रकरण प्रस्तुत न करने पर कमिश्नर ने दो जिला शिक्षा अधिकारियों तथा पाँच विकासखण्ड शिक्षाधिकारियों के विरूद्ध कार्यवाही के निर्देश दिए। कमिश्नर ने कहा कि पेंशन प्रकरण समय पर दर्ज न होने पर संबंधित कार्यालय प्रमुख के विरूद्ध कड़ी अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी। कमिश्नर ने कहा कि अक्षय ऊर्जा विभाग द्वारा सभी शासकीय भवनों में सोलर पैनल निःशुल्क लगाए जा रहे हैं। इस संबंध में संभागीय अधिकारियों के व्हाट्सएप ग्रुप में गूगल शीट दी गई है। इसमें मोबाइल नम्बर तथा सोलर पैनल लगाने के लिए उपयुक्त छत का आकार दर्ज कर दें। साथ ही हर माह की विद्युत खपत की भी जानकारी दे दें। सोलर पैनल लगने के बाद कार्यालय का बिजली बिल लगभग आधा हो जाएगा। बैठक में कमिश्नर ने धान उपार्जन में किसानों के लंबित भुगतान तत्काल करने तथा उपार्जित धान के भण्डारण के संबंध में अधिकारियों को निर्देश दिए। बैठक में मुख्य अभियंता लोक निर्माण संजय खाण्डे, मुख्य अभियंता ऊर्जा आईके त्रिपाठी, संयुक्त आयुक्त दिव्या त्रिपाठी, डीन मेडिकल कालेज सुनील अग्रवाल, क्षेत्रीय संचालक स्वास्थ्य डॉ एमएल गुप्ता, संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, संभागीय प्रबंधक सड़क विकास निगम उमेश सिंह, संभागीय प्रबंधक सेतु निगम वसीम खान, अधीक्षण यंत्री पीएचई जेएस धुर्वे तथा अन्य संभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

आकस्मिकता योजनान्तर्गत राशि स्वीकृत

रीवा। आकस्मिकता योजनान्तर्गत दो हितग्राहियों को तीन लाख रूपये की सहायता राशि स्वीकृत की गई है। जिला संयोजक अनुसूचित जाति एवं जनजातीय कार्य विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार अत्याचार से पीड़ित दो हितग्राहियों को तीन लाख रूपये की सहायता राशि आकस्मिकता योजनान्तर्गत मंजूर की गई है।

रजिस्ट्रीकरण अधिकारी नियुक्त

रीवा। मध्यप्रदेश राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकारी एम.बी. ओझा द्वारा प्रियंका महिला प्राथमिक उपभोक्ता सहकारी भण्डार मर्यादित वार्ड क्रमांक 8 बोदाबाग रीवा के लिए संचालक मंडल के सदस्यों व अन्य पदाधिकारियों को अन्य संस्थाओं में भेजे जाने वाले प्रतिनिधियों के निर्वाचन हेतु विकास माठे को रजिस्ट्रीकरण अधिकारी नियुक्त किया गया है।

हवाई अड्डे के हाई जैकिंग मॉक ड्रिल की गई

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। रीवा हवाई अड्डे में वार्षिक एंटी हाईजैकिंग मॉक एक्सरसाइज का आयोजन किया गया। इस दौरान भाग लेने के लिए एक डमी विमान 'फ्लाई हाई' नामित किया गया। तदुपरांत विमान का अपहरण कर लिया गया और कम ईंधन चेतावनी दी गई जिसे रीवा हवाई अड्डे पर उतरना है।

ईंधन आपात स्थिति के कारण एटीसी को रीवा एयरपोर्ट पर विमान को उतारने की अनुमति दी गई। एटीसी ने हाईजैक की सूचना तुरंत जिला प्रशासन, पुलिस, स्वास्थ विभाग को भेजी तथा कार्यवाही कर मॉकड्रिल करते हुए विमान को पुलिस अभिरक्षा में ले किया। माकड्रिल मे रीवा एयरपोर्ट की ऐरोड्रोम समिति जिसने अपहरणकर्ता से समझौते किए थे उपस्थित रहे। इस दौरान अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी, एयरपोर्ट निदेशक-नवनीत चौधरी, चीफ एविएशन सिक्योरिटी ऑफिसर, डिसनल एस.पी विवेक लाल, ए. टी. सी प्रभारी श्रीमती आरती सिन्हा, मुख्य सुरक्षा अधिकारी-शुभम शर्मा, फ्लाईबिग एयरलाइन प्रभारी केडी सिंह सहित एयरपोर्ट से फायर विभाग ऐश्वर्य मीणा, सी.एन.एस इंचार्ज अंकुश गौतम उपस्थित रहे। इसके साथ ही बी.सी.ए.एस भोपाल के प्रतिनिधि सीताराम मीणा, एन.एस.जी कमांडो टीम अहमदाबाद उपस्थित रहे। रीवा जिले से मेडिकल टीम एवं फायर टीम मौके पर उपस्थित रही। क्रिक रिस्पांस टीम पुलिस और बम डिस्पोजल स्क्वॉड, थाना प्रभारी आशीष मिश्रा का माकड्रिल में सहयोग रहा।

फाइलेरिया उन्मूलन संबंधी बैठक मऊगंज में 5 को

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर मऊगंज अजय श्रीवास्तव की अध्यक्षता में फाइलेरिया उन्मूलन से संबंधित जिला टास्क फोर्स की द्वितीय बैठक 5 फरवरी को दोपहर बाद एक बजे से कलेक्ट्रेट सभागार मऊगंज में आयोजित की गयी है। बैठक में मऊगंज जिले के हनुमना विकासखण्ड में फाइलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम में सामूहिक दवा सेवन अभियान के सफल क्रियान्वयन के संबंध में विचार विमर्श किया जायेगा।

दस्तक अभियान का दूसरा चरण 18 फरवरी से 18 मार्च तक

दस्तक अभियान के लिए एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला संपन्न

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। जिले भर में दस्तक अभियान का दूसरा चरण 18 फरवरी से 18 मार्च तक आयोजित किया जा रहा है। अभियान के दौरान 9 माह से 5 साल तक के दो लाख 82 हजार 556 बच्चों का फालोअप किया जाएगा। अभियान की एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय में आयोजित की गई। कार्यशाला में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ संजीव शुक्ला ने कहा कि दस्तक अभियान के दूसरे चरण में फॉलोअप करें। इस चरण में प्रथम चरण में टीकाकरण तथा उपचार से लाभांवित बच्चों की पूरी जानकारी लें। कम पोषित तथा न्यूमोनिक बच्चों को समुचित उपचार की सुविधा दें जिससे जिले का हर शिशु पूरी तरह से स्वस्थ रहे। कार्यशाला में जिला टीकाकरण अधिकारी डॉ बीके अग्निहोत्री ने कहा कि प्रथम चरण में दो लाख 82 हजार 556 बच्चों का टीकाकरण किया गया था। इन सभी की पुनः जाँच की जाएगी। अभियान के दौरान यदि कोई बच्चा गंभीर रूप से ग्रस्त मिलेगा तो उसे अस्पताल में भर्ती करके समुचित उपचार दिया जाएगा। आशा कार्यकर्ता, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता तथा सहायिका पुनः घर-घर जाकर 9 माह से 5 साल तक के बच्चों की स्वास्थ्य की जानकारी लेंगी। दस्तक अभियान के प्रथम चरण में यदि कोई बच्चा विटामिन ए का घोल पीने से वंचित रह गया तो उसे विटामिन ए का घोल दिया जाएगा। डॉ अग्निहोत्री ने अभियान के लिए विकासखण्डवार बनाई गई कार्ययोजना की जानकारी दी। कार्यशाला में महिला एवं बाल विकास विभाग के परियोजना अधिकारी, सभी बीएमओ, डीपीएम राघवेन्द्र मिश्रा, मेडिकल आफीसर तथा अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

कलेक्टर ने निर्माणाधीन एसडीएम कार्यालय भवन का किया निरीक्षण

आईटी पार्क का निर्माण कार्य तत्काल शुरू करने के निर्देश

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल ने कालेज चौराहे के समीप निर्माणाधीन एसडीएम तथा तहसील हुजूर कार्यालय भवन का निरीक्षण किया। कलेक्टर ने मौके पर उपस्थित लोक निर्माण विभाग पीआईयू के अधिकारियों को निर्देश देते हुए कहा कि भवन का शेष निर्माण कार्य तेजी से पूरा करें। निर्माण कार्यों में गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखें। भवन का निर्माण पूरा होने के साथ-साथ इसके बाउन्ड्रीवॉल का निर्माण कराकर इसे सुरक्षित बनाएं। भवन परिसर में पर्याप्त स्थान उपलब्ध हैं। इसमें वाहनों की पार्किंग के लिए भी समुचित व्यवस्था करें।

उल्लेखनीय है कि 7 करोड़ 82 लाख रूपये की लागत से बनाये जाने वाले संयुक्त अनुविभागीय राजस्व कार्यालय भवन में एसडीएम कार्याल, उप कोषालय, पटवारी कक्षों तथा कांफ्रेंस हाल सहित अन्य कक्षों का निर्माण कराया जा रहा है। इसके बाद कलेक्टर ने कालेज चौराहे के समीप आईटी पार्क निर्माण के लिए की जा रही तैयारियों का निरीक्षण किया। कलेक्टर ने कहा कि आईटी पार्क का निर्माण कार्य तत्काल शुरू कराएं। निर्धारित कार्ययोजना के अनुसार भवन का निर्माण कार्य तय समय सीमा में पूरा करें। आईटी पार्क के निर्माण से तकनीकी कौशल के क्षेत्र में तेजी से विकास होगा। विदित हो कि 54 करोड़ रूपये की लागत से 10 मंजिल आईटी पार्क में बेसमेंट व पार्किंग का निर्माण कराया जा रहा है। निरीक्षण के समय एसडीएम हुजूर वैशाली जैन, तहसीलदार शिवशंकर शुक्ला, कार्यपालन यंत्री केके तिवारी, सहायक यंत्री पीआईयू संजीव कालरा, नायब तहसीलदार विन्ध्या मिश्रा तथा निर्माण एजेंसियों के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त

मीडिया ऑडीटर, रीवा (निप्र)। मध्यप्रदेश राज्य सहकारी निर्वाचन प्राधिकारी एम.बी. ओझा ने जिले की सोसायटियों में संचालक मंडल के सदस्यों व पदाधिकारियों को अन्य संस्थाओं में भेजे जाने के निर्वाचन हेतु रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किये हैं। मानव सेवा ईंधन क्रय-विक्रय सहकारी समिति मर्यादित वार्ड क्रमांक 10 रीवा के लिये वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक अम्बरीष देव, आदिवासी मछुआ सहकारी समिति मर्यादित बरहा मुड़वार विकासखण्ड सिरमौर के लिये वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक एम.एल. साकेत, प्राथमिक उपभोक्ता सहकारी भण्डार मर्यादित रीवा वार्ड क्रमांक 17 एवं 19 के लिए वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक एम.एल. साकेत, संध्या महिला प्राथमिक उपभोक्ता सहकारी सहकारी भण्डार मर्यादित वार्ड क्रमांक 40 रीवा के लिए वरिष्ठ सहकारी निरीक्षक ओ.पी. श्रीवास्तव तथा महिला प्राथमिक उपभोक्ता सहकारी भण्डार मर्या. सेमरिया के लिए उप अंकेक्षक बी.एल. कन्नौजी को रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किया गया है।

स्वत्वाधिकारी मुद्रक/प्रकाशक संदीप द्विवेदी द्वारा मीडिया ऑडीटर पब्लिकेशन प्रा.लिमि. राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से मुद्रित कर मीडिया ऑडीटर कार्यालय राजीव मार्ग निराला नगर रीवा से प्रकाशित, **संपादक संदीप द्विवेदी**, आर.एन.आई नं. 69082/97, डाक पंजीयन क्र.- म. प्र./ रीवा संभाग/ 46/2023-2025, प्रधान कार्यालय रीवा (सिटी कार्यालय चक्रधर सिटी सेंटर रीवा) फोन. नं. 9589645803, 7974467831 Mediaauditor1@gmail.com सभी विवादों का न्याय क्षेत्र रीवा होगा।